



दैनिक

जयपुर टाइम्स

नई सोच नई रफ्तार

जयपुर,सीकर, झुंझुनूं, चुरू,नागौर एवं अलवर से एक साथ प्रकाशित

jaipurtimes.org
twitter.com/JaipurTimes2
dainikjaipurtimes
youtube.com/c/JaipurTimes
instagram.com/jaipurtimesjt

वर्ष : 10

अंक : 22

डाक पंजीयन संख्या : जयपुर सिटी / 007/2017-19

जयपुर, मंगलवार 11 फरवरी, 2025

RNI.No.RAJHIN/2016/70162

मूल्य : 1.5 रुपए

पृष्ठ : 8+2

पशुपतिनाथ महादेव मंदिर मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा समारोह

मरूधरा के सांस्कृतिक व आध्यात्मिक विकास के लिए राज्य सरकार प्रयासरत: भजनलाल



जयपुर टाइम्स

जयपुर (कासं.)। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने कहा कि मंदिरों ने भारतीय परंपराओं, संस्कृति और मूल्यों को संरक्षित करने का काम किया है। मंदिर आस्था के प्रतीक होने के साथ ही हमारी सामाजिक व सांस्कृतिक चेतना के भी प्रमुख केंद्र हैं। उन्होंने कहा कि मंदिर भारतीय सनातन संस्कृति की आत्मा है जिससे हमारी विरासत मजबूत होती है। हमारी सरकार प्रदेश में सांस्कृतिक व आध्यात्मिक विकास के लिए निरंतर काम कर रही है। शर्मा ने सोमवार को चित्तौड़गढ़ के मातृकुंडिया के श्री पशुपतिनाथ महादेव मंदिर मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा समारोह को संबोधित किया। उन्होंने कहा कि चित्तौड़ की धरती शूरवीरों की धरा है। इस धरती पर वीर महाराणा प्रताप, भक्त शिरोमणि मीराबाई जैसी महान विभूतियां हुई हैं। साथ ही, यह भक्ति और आध्यात्म के एक प्रमुख केंद्र के रूप में भी प्रसिद्ध है। उन्होंने मातृकुंडिया के श्री पशुपतिनाथ महादेव मंदिर में मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा के अवसर पर प्रदेशवासियों को बधाई दी। उन्होंने कहा कि 'मेवाड़ का हरिद्वार' के नाम से प्रसिद्ध मातृकुंडिया में स्थापित यह मंदिर एक महत्वपूर्ण आस्था केंद्र के रूप में उभरेगा और इस क्षेत्र को आध्यात्मिक शक्ति प्रदान करेगा।

प्रधानमंत्री के नेतृत्व में 'विकास भी और विरासत भी'

मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी 'विकास भी और विरासत भी' की अवधारणा को मानते हुए देश में विकास के साथ विरासत को आगे बढ़ा रहे हैं। उनके नेतृत्व में 2014 के बाद देश में अभूतपूर्व बदलाव आया है। उन्होंने गरीब कल्याण, आतंकवाद-नक्सलवाद का खात्मा, देश की आर्थिक वृद्धि और दुनिया में देश का मान-सम्मान बढ़ाया है जिससे देश के विकास को एक नई दिशा मिली है।

अन्नदाता किसान के सशक्तीकरण के लिए राज्य सरकार प्रतिबद्ध

मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य सरकार उत्कृष्ट और विकसित राजस्थान की परिकल्पना को साकार करने के लिए प्रतिबद्ध है। हमने प्रदेश की आवश्यकताओं को समझते हुए पहले बिजली-पानी की आवश्यकताओं पर काम किया है। ईआरसीपी, यमुना जल समझौता, देवास परियोजना जैसे निर्णयों से जहां पानी की आवश्यकता को पूरा किया जा रहा है। वहीं, प्रदेश में किसानों को दिन में बिजली देने के उद्देश्य से राज्य सरकार काम कर रही है। उन्होंने कहा कि वे किसानों के दर्द को भली-भांति समझते हैं। हमारे अन्नदाता किसानों को अगर खेती के लिए पर्याप्त पानी तथा बिजली मिलेगी तो वे सशक्त होंगे। राज्य सरकार ने किसानों की सम्मान निधि और गेहूँ की एमएसपी में वृद्धि जैसे अनेक निर्णय लिए, जिससे किसानों को आर्थिक संबल मिला है। उन्होंने कहा कि पांच वर्ष में चार लाख सरकारी नौकरी देकर युवाओं को रोजगार के अवसर उपलब्ध कराने के लिए हमारी सरकार प्रतिबद्ध है। हमने संकल्प पत्र में किए गए 50 प्रतिशत से अधिक वादे पूरे कर लिए हैं और प्रत्येक वादे को पूरा करने के लिए हम कृतसंकल्पित हैं। इससे पहले मुख्यमंत्री ने तेजाजी मंदिर, मंगलेश्वर मंदिर और पशुपतिनाथ महादेव मंदिर के दर्शन कर प्रदेश की खुशहाली व सुख-समृद्धि की कामना की। इस अवसर पर जन-स्वास्थ्य आध्यात्मिक मंत्री कन्हैयालाल, सहकारिता राज्यमंत्री गौतम दक, सांसद सीपी जोशी, विधायक श्रीचंद कुपलानी, अर्जुनलाल जीनगर, सुरेश धाकड़, चंद्रभान सिंह आक्या, जिला कलक्टर आलोक रंजन, एस पी कुंधीर जोशी सहित कई जनप्रतिनिधि उपस्थित रहे।

उप मुख्यमंत्री ने विश्वकर्मा जयंती पर प्रदेशवासियों को दी शुभकामनाएं

देश और प्रदेश के आर्थिक विकास में विश्वकर्मा बंधुओं का महत्वपूर्ण योगदान- दिया कुमारी

जयपुर टाइम्स



केजरी को घेरने में कोई कसर नहीं छोड़ रही भाजपा

शीशमहल को मूल स्थिति में बहाली की

मांग, एलजी को पत्र

जयपुर टाइम्स

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारतीय जनता पार्टी की ओर से आम आदमी पार्टी के राष्ट्रीय संयोजक अरविंद केजरीवाल की घेराबंदी चुनाव के बाद भी जारी है। दरअसल भाजपा ने सोमवार को उपराज्यपाल को पत्र लिखकर अनुरोध किया है कि शीश महल के साथ विलय की गई अन्य संपत्तियों को रह किया जाए। प्रदेश अध्यक्ष वीरेंद्र सचदेवा ने कहा कि शीश महल का विस्तार चार सरकारी संपत्तियों को मिलाकर किया गया है। बता दें कि शीश महल का इस्तेमाल भाजपा ने हालिया विधानसभा चुनावों के दौरान भ्रष्टाचार के मुद्दों पर अरविंद केजरीवाल को घेरने के लिए एक राजनीतिक हथियार के रूप में किया था।

हमारा मुख्यमंत्री नहीं रहेगा इस बंगले में

सचदेवा ने कहा कि हमारी सरकारी बनने के बाद इस बात का फैसला करेगी कि इस बंगले का इस्तेमाल कैसे करना है। लेकिन हमारा मुख्यमंत्री इस घर में नहीं रहेगा। ज्ञात हो कि यह बंगला 2015 से अक्टूबर 2024 तक दिल्ली के मुख्यमंत्री के रूप में अरविंद केजरीवाल का आधिकारिक निवास था। लेकिन मुख्यमंत्री पद से इस्तीफा देने के बाद केजरीवाल ने इसे खाली कर दिया था।

पाक की फिर नापाक हरकत, भारतीय

सैनिकों पर साइपर हमला

जयपुर टाइम्स

श्रीनगर (एजेंसी)। जम्मू-कश्मीर के राजौरी जिले के नौशेरा सेक्टर स्थित कलाल क्षेत्र में सोमवार को पाकिस्तान ने एक बार फिर से अपनी कारगरना हरकत को अंजाम दिया है। जानकारी मिल रही है कि दोपहर 2.40 बजे भारतीय सेना की टुकड़ी सीमा पर गश्त कर रही थी। इस दौरान भारतीय सैनिकों को निशाना बना कर पाकिस्तान की ओर से साइपर हमला किया गया।

इस हमले में भारतीय सेना का एक जवान घायल हुआ है। घायल सैन्य जवान को प्राथमिक उपचार के दौरान हवाई मार्ग से सैन्य अस्पताल 150 जीएच राजौरी शिफ्ट किया गया। घायल सैन्य जवान की पहचान हवलदार पुरन सिंह 4 कमाऊ (कलाल बटालियन) के रूप में हुई है। फिलहाल इस बात की आधिकारिक तौर पर पुष्टि नहीं की गई।

सर्दी से मिलेगी राहत, बढ़ने लगा तापमान

जयपुर टाइम्स

जयपुर (कासं.)। प्रदेश में सर्दी से राहत मिलने लगी है। प्रदेश के ज्यादातर शहरों में न्यूनतम तापमान 8 से 14 डिग्री के बीच दर्ज किया गया है। वहीं अधिकतम पारा 32 डिग्री तक पहुंच गया है। मौसम विभाग का अनुमान है कि अगले 24 घंटों के दौरान प्रदेश में तापमान में और ज्यादा इजाफा होगा।

मौसम विभाग का कहना है कि अलावा उत्तरी हवा का रुख कमजोर पड़ने से तापमान में बढ़ोतरी और सर्दी से कुछ राहत मिलने की उम्मीद है। प्रदेश में बाढ़ग्रस्त सबसे गर्म इलाका रहा। यहां बीते 24 घंटे में 32.0 डिग्री सेल्सियस अधिकतम तापमान दर्ज किया गया, वहीं निम्नतम न्यूनतम तापमान दौसा में 5.4 डिग्री दर्ज किया गया।

प्रदेश में बड़ी संख्या में कारीगर व हस्तशिल्पी पारंपरिक कार्यों में अत्यंत प्रतिभाशाली हैं।

उन्होंने कहा कि पारंपरिक कारीगरों की प्रतिभा को निखारने, प्रशिक्षण और व्यवसाय में वृद्धि के उद्देश्य से प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में केंद्र सरकार की ओर से पीएम विश्वकर्मा योजना चलाई जा रही है, जो कि कारीगरों और शिल्पकारों को सशक्त बनाने में सहायता प्रदान कर रही है। इस योजना का उद्देश्य विभिन्न पारंपरिक शिल्पों में कुशल व्यक्तियों का उथान करना है, जिससे भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित किया जा सके। विश्वकर्मा योजना की मूल भावना है - सम्मान, सामर्थ्य और समृद्धि। यानी पारंपरिक हुनर का सम्मान, कारीगरों का सशक्तिकरण और विश्वकर्मा बंधुओं के जीवन में समृद्धि, ये ही हमारा लक्ष्य है। यह योजना देश के लाखों विश्वकर्मा बंधुओं को आगे बढ़ने का मौका दे रही है।

ड्रम के खिलाफ मोदी की जीरो टॉलरेंस नीति का असर: जब्ती में 55% की बढ़ोतरी

जयपुर टाइम्स

नई दिल्ली (एजेंसी)। केंद्र सरकार की तरफ से सोमवार को जारी एक आधिकारिक बयान में कहा गया कि 2024 के दौरान कई एजेंसियों ने 25,330 करोड़ रुपये से अधिक मूल्य के नशीले पदार्थ जप्त किए गए। यह जब्ती 2023 के मुकाबले 55 फीसदी अधिक है।

केंद्र की नशीली दवाओं के खिलाफ शून्य-सहिष्णुता नीति के मुताबिक नशीले पदार्थ की जब्ती की यह कार्रवाई नारकोटिक्स कंट्रोल ब्यूरो सहित सभी कानून प्रवर्तन एजेंसियों ने की। बयान में आगे कहा गया है कि यह दिखाता है कि नशीली सिंथेटिक दवाओं, कोकीन और मनोदैहिक पदार्थों के तौर पर इस्तेमाल की जाने वाली फार्मास्यूटिकल दवाओं की जब्ती में 2023 के मुकाबले 2024 में खासी बढ़ोतरी हुई है।

जयपुर टाइम्स

नई दिल्ली (एजेंसी)। हरियाणा के मंत्री अनिल विज की ओर से मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी और प्रदेश अध्यक्ष मोहन लाल बड़ौली को दिए सार्वजनिक बयानों को भाजपा ने गंभीरता से लिया है। पार्टी अध्यक्ष मोहन लाल बड़ौली ने अनिल विज को कारण बताओ नोटिस जारी कर तीन दिन में जवाब मांगा है।

पार्टी अध्यक्ष की ओर से दिए नोटिस में बड़ौली ने कहा कि आपने पार्टी अध्यक्ष और पार्टी के मुख्यमंत्री पद के खिलाफ सार्वजनिक रूप से बयान दिया है। यह गंभीर आरोप है। यह कदम न केवल पार्टी के विचारधारा के खिलाफ है बल्कि यह उस समय हुआ, जब पार्टी पड़ोसी राज्य में चुनाव के लिए अभियान चला रही थी। चुनावी समय में इस प्रकार की बयानबाजी से पार्टी की छवि को नुकसान होगा, यह जानते हुए आपने यह बयान दिए जो पूरी तरह से अस्वीकार्य है।



इन बयानों पर हुआ था बवाल

प्रदेश अध्यक्ष मोहनलाल बड़ौली को लेकर अनिल विज ने 2 फरवरी को कहा था कि उन्हें पद से इस्तीफा देना चाहिए क्योंकि उन पर दुष्कर्म के आरोप में मामला दर्ज है। वह महिलाओं की मीटिंग किस तरह ले सकते हैं। सोनीपत के गोहाना में उन्होंने कहा था, हम तो महिलाओं को 30 प्रतिशत

इस के खिलाफ जीरो टॉलरेंस नीति रंग लाई :

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में, इस के खिलाफ जीरो टॉलरेंस नीति अपनाते हुए 2024 में, नारकोटिक्स कंट्रोल ब्यूरो (एनसीबी) सहित देश भर की सभी कानून प्रवर्तन एजेंसियों ने लगभग 25,330 करोड़ रुपये मूल्य के नशीले पदार्थ जप्त किए, जो 2023 में जप्त किए गए 16,100 करोड़ रुपए मूल्य के नशीले पदार्थों के मुकाबले में 55 फीसदी अधिक है। बयान में कहा गया है कि नशीले पदार्थों की जब्ती में यह बढ़ोतरी सरकार के फैसले को पूरी सरकारी मशीनरी के जमीनी तौर पर लागू करने का नतीजा है।

मेथामफेटामाइन से लेकर हशीश की जब्ती में इजाफा:

सरकारी आंकड़ों के मुताबिक, मेथामफेटामाइन की जब्ती 2023 के 34 क्विंटल से योगुनी होकर 2024 में 80 क्विंटल हो गई है। इसी तरह जप्त किए गए कोकीन की मात्रा भी 2023 के 292 किलो से बढ़कर 2024 में 1426 किलो गई है। जप्त किए गए मेफेडोन की मात्रा भी 2023 के 688 किलोग्राम से बढ़कर 2024 में 3391 किलो जा पहुंची। इसी तरह, जप्त की गई हशीश की मात्रा 2023 के 34 क्विंटल से बढ़कर 2024 में 61 क्विंटल हो गई है। वहीं, मनोदैहिक विकारों में इस्तेमाल होने वाली नशीली दवाओं की जब्ती की मात्रा भी 1.84 करोड़ टैबलेट से बढ़कर 4.69 करोड़ टैबलेट हो गई है।

अनर्गल बयानों पर भाजपा का केन्द्रीय नेतृत्व सख्त: अनिल विज को थमाया नोटिस

तक बढ़ा रहे हैं, ऐसे में धारा-376 का आरोपी प्रदेशाध्यक्ष नहीं रह सकता। हमारे बड़े-बड़े नेताओं पर भी आरोप लगे थे। आडवाणी पर भी आरोप लगे थे, उनका नाम आया था और उन्होंने त्यागपत्र दे दिया था। बड़ौली उनसे बड़े तो नहीं हैं। उन्हें त्यागपत्र दे देना चाहिए।

उड़न खटोले पर नायब सैनी

मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी को लेकर अनिल विज ने 31 जनवरी को अंबाला में कहा था कि जिन लोगों ने मुझे चुनाव हारने की कोशिश की, चाहे वह अधिकारी थे, कर्मचारी थे या छुट्टेयें नेता थे, मैंने उन सबके बारे में लिखकर दिया। 100 दिन हो चुके हैं, इस मामले में न तो मुझसे पूछा गया, न ही कोई कार्रवाई हुई। मुझे शक था कि मुझे हारने के लिए किसी बड़े नेता के द्वारा यह काम किया गया है। हमारे मुख्यमंत्री, जब से सीएम बने हैं तब से उड़नखटोले पर ही हैं। नीचे उतरें तो जनता के प्रति देखें। ये मेरी आवाज नहीं है, सारे एमएलए सारे मंत्रियों की आवाज है।



परीक्षा पे चर्चा कार्यक्रम में मोदी ने की विद्यार्थियों से तनाव मुक्ति पर बात

पीएम की अभिनव पहल से बच्चों के सुखद भविष्य की नींव होगी सुदृढ़ : सीएम भजनलाल

जयपुर टाइम्स

जयपुर (कासं.)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने सोमवार को परीक्षा पे चर्चा कार्यक्रम के 8 वें संस्करण में विद्यार्थियों के साथ तनाव मुक्त परीक्षा के विभिन्न पहलुओं पर बातचीत की। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने भी जयपुर के मानसरोवर स्थित महात्मा गांधी राजकीय अंग्रेजी माध्यम स्कूल में शिक्षकों व विद्यार्थियों के साथ परीक्षा पे चर्चा कार्यक्रम सुना। देश के विभिन्न राज्यों के विद्यार्थियों से चर्चा के दौरान प्रधानमंत्री ने उनको परीक्षा के तनाव से मुक्त रहने और टाइम मैनेजमेंट के उपयोगी सुझाव दिए। प्रधानमंत्री ने बच्चों से कहा कि वे परीक्षा का तनाव महसूस न करें और अपने लक्ष्य निर्धारित करें। उन्होंने कहा कि विद्यार्थी दूसरों से प्रतिस्पर्धा करने की बजाय खुद को प्रेरित करते हुए बेहतर बनाने का प्रयास करें क्योंकि जो खुद से स्पर्धा करता है, वह जीवन में कभी भी पीछे नहीं रहता। हमें हमारी विफलताओं से सीख लेते हुए आगे बढ़ना चाहिए। उन्होंने कहा कि परीक्षाओं में अच्छे नंबर लाना उनका महत्वपूर्ण नहीं, जितना निरंतर ज्ञान अर्जित करना है।

मोदी ने लीडरशिप पर बात करते हुए कहा कि एक अच्छे लीडर को खुद में सकारात्मक बदलाव कर अन्य लोगों के सामने उदाहरण प्रस्तुत करना चाहिए। उन्होंने कहा कि टीम वर्क, धैर्य, ज़रूरतमंदों की मदद और लोगों का विश्वास जीतना भी एक नेतृत्वकर्ता का महत्वपूर्ण गुण है।

अभिभावक बच्चों की अभिरूचि और क्षमताओं को समझे :

प्रधानमंत्री ने अभिभावकों को सलाह दी कि वे बच्चों पर अपनी महत्वकांक्षाएं थोपे बिना उनकी अभिरूचि और क्षमताओं को समझे और उनकी पसंद का कैरियर चुनने में मदद करें। मोदी ने शिक्षकों से भी अपील की कि वे विद्यार्थियों की आपस में तुलना करने से बचें और संवेदनशीलता के साथ प्रत्येक विद्यार्थी की समस्याओं को दूर करने का प्रयास करें। इस दौरान उन्होंने बच्चों के साथ पोषण, आहार-विहार, मिलेट्स, पर्यावरण संरक्षण और एक पेड़ मां के नाम अभियान के बारे में चर्चा की। उन्होंने बच्चों के साथ पौधारोपण भी किया। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी हमेशा अपने कर्म, वचन और व्यवहार से देशवासियों को प्रेरित करते हैं। परीक्षा पर चर्चा कार्यक्रम के रूप में उनकी यह अभिनव पहल बच्चों में परीक्षा से संबंधित तनाव को कम करके उनका आत्मविश्वास बढ़ाने में अत्यंत उपयोगी सिद्ध हुई है। इससे विद्यार्थियों में सकारात्मक ऊर्जा का संचार होगा और उनके सुखद भविष्य की नींव सुदृढ़ होगी। इस दौरान मुख्यमंत्री ने महात्मा गांधी राजकीय अंग्रेजी माध्यम स्कूल के प्रतिभावान छात्र-छात्राओं को सम्मानित भी किया। इस अवसर पर शिक्षा मंत्री मदन दिलावर, जयपुर ग्रेटर नगर निगम महापौर डॉ.सौम्या गुर्जर, शासन सचिव स्कूल शिक्षा कृष्ण कुणाल, आयुक्त स्कूल शिक्षा अनुपमा जोरवाल, निदेशक माध्यमिक शिक्षा आशीष मोदी सहित शिक्षक व विद्यार्थी उपस्थित रहे।

जीवन में समय प्रबंधन

महत्वपूर्ण :

प्रधानमंत्री ने कहा कि जीवन में समय प्रबंधन बहुत महत्वपूर्ण है। विद्यार्थियों को परीक्षा के दौरान अपने अध्ययन और अन्य कार्यों की समय सारणी बनाकर समय का सदुपयोग करते हुए उन्हें समाहित करना चाहिए। उन्होंने कहा कि तनाव से उबरने में ध्यान और योग बहुत उपयोगी हैं। नियमित योगाभ्यास से तनाव दूर होने के साथ ही कार्य क्षमता में भी वृद्धि होती है। पीएम ने बच्चों को परीक्षा में प्रश्न पत्र को हल करने संबंधी टिप्स भी दीं।

लोगों का विश्वास जीतना

लीडर का गुण

जनधन योजना में 54.5 करोड़ लोगों के खोले खाते

जयपुर टाइम्स

नई दिल्ली (एजेंसी)। जनधन बैंक खातों की स्थिति को लेकर जनधन को लोकसभा में केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने कहा कि देश में 15 जनवरी 2025 तक 54.58 करोड़ जनधन खाते खोले गए। इसमें 30.37 करोड़ (55.7 फीसदी) खाते महिलाओं के हैं। इस दौरान केंद्रीय वित्त मंत्री ने सामाजिक सुरक्षा योजनाओं का छाटा भी दिया। इसमें प्रधानमंत्री जीवन ज्योति बीमा योजना, प्रधानमंत्री सुरक्षा बीमा योजना और अटल पेंशन योजना शामिल हैं। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री जीवन ज्योति बीमा योजना में 22.52 करोड़ लोग पंजीकृत हैं, इसमें 10 करोड़ महिलाएं हैं।

आगे बढ़ा दिया गया। फिर इसका लक्ष्य बैंकिंग से वंचित हर व्यक्ति किया गया। वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने कहा कि देश में 15 जनवरी 2025 तक 54.58 करोड़ जनधन खाते खोले गए। इसमें 30.37 करोड़ (55.7 फीसदी) खाते महिलाओं के हैं।

इस दौरान केंद्रीय वित्त मंत्री ने सामाजिक सुरक्षा योजनाओं का छाटा भी दिया। इसमें प्रधानमंत्री जीवन ज्योति बीमा योजना, प्रधानमंत्री सुरक्षा बीमा योजना और अटल पेंशन योजना शामिल हैं। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री जीवन ज्योति बीमा योजना में 22.52 करोड़ लोग पंजीकृत हैं, इसमें 10 करोड़ महिलाएं हैं।



कैरियर मेला एवं वार्षिक उत्सव में बच्चों ने लिया बड़-चढ़कर भाग

जयपुर टाइम्स

अलवर(निस)। रा. उ. मा. वि. रेल्वे स्टेशन में सोमवार को प्रधानमंत्री द्वारा परीक्षा पे चर्चा कार्यक्रम में सभी विद्यार्थियों को प्रांगण में बैठा कर दिखाया गया। उसके पश्चात विद्यालय में कैरियर मेला एवं कार्षिक उत्सव का आयोजन किया गया।

कैरियर मेले में विशेषज्ञों को आमन्त्रित किया गया। जिनमें मुख्य वक्ता गिरीश गुप्ता और शिक्षा विद्ध राजेश शर्मा प्रधानाचार्य व मोहन कोशिक प्रधान ने शिक्षा विद् के रूप में अपने विचार रखे। कार्यक्रम की अध्यक्षता स्थानिय विद्यालय के प्रधानाचार्य मनिराम गुर्जर ने की। तथा मुख्य अतिथी भाजपा जिला अध्यक्ष अशोक गुप्ता व विशिष्ट अतिथि जितेन्द्र थे।

वार्षिक उत्सव कार्यक्रम में खेल प्रतिभागी व समाज सेवा करने वाले विद्यार्थियों को सम्मानित किया गया गया। बोर्ड परीक्षा में प्रथम आये विद्यार्थियों को सम्मानित किया गया। प्रधानाचार्य ने विद्यालय का प्रतिवेदक प्रस्तुत किया।

निःशुल्क आयुर्वेद चिकित्सा शिविर पन्द्रह को

जयपुर टाइम्स

अलवर(निस)। नेक कमाई फाउंडेशन की ओर से मारुति आयुर्वेद के सहयोग से पन्द्रह फरवरी को पुरुषार्थी धर्मशाला विवेकानंद चौक पर एक दिवसीय निःशुल्क आयुर्वेदिक चिकित्सा शिविर आयोजित किया जाएगा। शिविर में जिले के नामी आयुर्वेद चिकित्सक मरीजों का इलाज करेंगे और दवाइयां भी दी जाएंगी। इस अवसर पर रक्तचाप व मधुमेह सहित अन्य जांच निःशुल्क होंगी। मुख्य कोर्डिनेटर अभिषेक तेनेजा ने बताया कि शिविर में जाने माने आयुर्वेद चिकित्सक डा. पवन शेखावत, डा.मुरारी लाल भारद्वाज, डा.बिशन चंद सेनी, डा. मुकेश प्रजापत, डा. अनिल जैन, डा. रेणु ग्रोवर और डा. रीता ग्रोवर हैं। इस शिविर में सहयोग करने वाली फार्मा कंपनियां विजय लाइफ केयर, गणेश फार्मास्यूटिकल, यूनाइटेड फार्मास्यूटिकल, आयु कल्प, श्री धनवंतरी हर्बल, एमपीआईएल, एस जी. पैथो फार्मा हैं। संरक्षक दौलत राम हजरती ने बताया कि इस शिविर में मौके पर ही पंजीयन किया जाएगा। शिविर में आयुर्वेद चिकित्सा के क्षेत्र में बेहतर कार्य करने वाले चिकित्सकों को सम्मानित भी किया जाएगा। शिविर में निर्धन महिलाओं का चयन भी होगा जिन्हें फाउंडेशन की ओर से सहायता दी जाएगी।

किसान समर्थन मूल्य पर गेहूं विक्रय हेतु

किसान 25 जून तक कराएं पंजीकरण

जयपुर टाइम्स

अलवर(निस)। राज्य के किसान समर्थन मूल्य पर गेहूं विक्रय हेतु 25 जून तक स्वयं अथवा अन्य माध्यम से <https:// food. rajasthan. gov.in> पोर्टल पर पंजीकरण करा सकते हैं।

जिला रसद अधिकारी विनोद कुमार जुनेजा ने बताया कि भारत सरकार द्वारा आरएमएस 2025-26 हेतु समर्थन मूल्य 2425 रुपये प्रति क्विंटन घोषित किया गया है। राज्य सरकार द्वारा किसानों के लिए राजस्थान कृषक समर्थन योजना अंतर्गत समर्थन मूल्य के ऊपर 125 रुपये प्रति क्विंटल बोनस घोषित किया गया है। उन्होंने बताया कि खाद्य विभाग के पोर्टल पर पंजीकरण करवा कर कय एजेंसीज के माध्यम से गेहूं विक्रय करने वाले पंजीकृत किसानों को उनके जनाधार से जुड़े बैंक खाते में कुल 2550 रुपये प्रति क्विंटल की दर से उनकी उपज का मूल्य प्राप्त होगा।

उन्होंने बताया कि राज्य में आरएमएस 2025-26 के दौरान समर्थन मूल्य पर गेहूं खरीद का कार्य 10 मार्च से 30 जून 2025 तक किया जाएगा। उन्होंने बताया कि जिले में गेहूं खरीद में एकसीआई के 8 केंद्र मालाखेडा, गोविन्दगढ, अलवर, बडोदागढ, खेरली, राजगढ एवं रेणी तथा नैफेड का एक केंद्र कटूमर में स्थापित किया गया है। राज्य के किसान गेहूं विक्रय हेतु 25 जून 2025 तक प्रतिदिन 24 घण्टे (किसी भी समय) पंजीयन करवा सकेंगे। किसान पंजीकरण प्रक्रिया से संबंधित अधिक जानकारी के लिए खाद्य विभाग के पोर्टल का अवलोकन करें।

अभियान की तरह क्रियान्वित किया जाए ‘सहकार से समृद्धि’ कार्यक्रम- जिला कलक्टर

जयपुर टाइम्स

खैरथल-तिजारा(निस)। जिला कलक्टर किशोर कुमार की अध्यक्षता में सोमवार को जिला सचिवालय खैरथल में सहकारिता समिति की बैठक आयोजित की गई। जिला कलेक्टर ने कहा कि अंतर्राष्ट्रीय सहकारिता वर्ष-2025 के उपलक्ष्य में वर्ष पर्यंत आयोजित होने वाले कार्यक्रमों के माध्यम से की जा रही कवायद का लाभ किसानों, सहकारी संस्थाओं के सदस्यों और सहकारी संस्थाओं तक बेहतर रूप में पहुंचे, यह सुनिश्चित

किया जाए।जिला कलेक्टर ने सहकारिता विभाग के अधिकारियों को अंतर्राष्ट्रीय सहकारिता वर्ष, ‘सहकार से समृद्धि’ कार्यक्रम एवं ग्राम पंचायत स्तर पर आयोजित होने वाले शिविरों के के बारे में परखेखा तैयार कर आवश्यक कार्यवाही हेतु निर्देशित किया।

उन्होंने कहा कि राज्य स्तर से जारी एसओपी के अनुसार जिले में आयोजित होने वाले कार्यक्रमों का कैलेण्डर तैयार कर आयोजनों की अविलम्ब शुरुआत की जाए। जिला कलेक्टर ने कहा कि जिला स्तर पर आयोजित किए जाने

वाली गतिविधियों में उस जिले से सम्बन्धित महत्वपूर्ण अवसरों का ध्यान रखा जाए। प्रत्येक माह एक बड़ी गतिविधि के साथ ही अन्य सारगर्भित गतिविधियों का आयोजन पाक्षिक तौर पर किया जाए। उन्होंने कहा कि आमजन में जागरूकता के लिए प्रभात फेरी, रथ यात्रा, प्रदर्शनी, वृक्षारोपण आदि के साथ ही विभिन्न प्रतिवर्गिताओं का आयोजन किया जा सकता है। उन्होंने आयोजनों में महिलाओं, युवाओं एवं विद्यार्थियों की पर्याप्त भागीदारी सुनिश्चित करने पर जोर दिया।



के तहत चल रहे कार्यों की प्रभावी मॉनिटरिंग कर कार्यों को गुणवत्ता के साथ आगामी चार माह में पूर्ण कराए। उन्होंने निर्देश दिये कि जिले की स्वच्छता रैंकिंग में सुधार हेतु विभागीय समन्वय स्थापित करें। उन्होंने निर्देशित किया

कि स्वच्छता संबंधी कार्य जैसे शौचालय, सॉलिट वेस्ट मैनेजमेंट इत्यादि की डैशबोर्ड बनाकर निगरानी तथा पानी संरक्षण संबंधी कार्य जैसे रेनवाटर हॉवैस्टिंग व एनीकट निर्माण इत्यादि में आवश्यक कार्यवाही करते हुए

समयबद्ध पूर्ण करवाएं। उन्होंने निर्देश दिये कि तांगा स्टैण्ड व महिला चिकित्सालय में कम्प्यूनिटी के रूप में फिंक टॉयलेट का निर्माण करावे। उन्होंने अमृत 2.0 प्रथम फेज के तहत शहर में होने वाले सीवेरेज कार्य की वस्तुस्थिति जानकर आवश्यक निर्देश दिए। जिला कलक्टर ने सार्वजनिक निर्माण विभाग के सड़क व भवन निर्माण कार्यों की विस्तृत समीक्षा करते हुए अधीक्षण अभियन्ता को निर्देश दिये कि बजट घोषणाओं सहित समस्त कार्यों की विभागीय स्तर पर नियमित मॉनिटरिंग करें। उन्होंने आरएसआरडीसी के सड़क एवं भवन निर्माण कार्यों की वस्तु स्थिति जानकारी मेडिकल कॉलेज बाउंड्री वॉल तथा 100 बैड्डेड हॉस्पिटल व क्रिटिकल यूनिट कार्य को यथा समय पूर्ण करने के निर्देश दिए। उन्होंने चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग के कार्यों की प्रगति की समीक्षा करते हुए सीएमएचओ को निर्देश दिये कि प्रतापगढ़ सीएचसी निर्माण कार्यों को प्रारम्भ करावे। जिला चिकित्सालय में शिशु चिकित्सालय उन्नयन के कार्यों की स्थिति की जानकारी लेकर आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। उन्होंने जल संसाधन विभाग के नहर एवं एनीकट निर्माण संबंधित महत्वपूर्ण कार्यों जैसे नटनी के बारा बिचर से जयसमंद बांध तक नहर का उन्नयन व ईआरसीपी संबंधित कार्यों की विस्तृत समीक्षा कर आवश्यक कार्यवाही हेतु निर्देशित किया।

जिला कलक्टर की अध्यक्षता में साप्ताहिक समीक्षा बैठक आयोजित

तंबाकू मुक्त राजस्थान हेतु जिला स्तरीय आमुखीकरण कार्यशाला का हुआ आयोजन

जयपुर टाइम्स

खैरथल तिजारा(निस)। जिला कलक्टर किशोर कुमार की अध्यक्षता में सोमवार को जिला कलेक्ट्रेट सभागार में विभिन्न विभागों की साप्ताहिक समीक्षा बैठक आयोजित हुई। उन्होंने संपर्क पोर्टल पर लॉबित चल रहे परिवादों का समय पर निस्तारण कर आमजन को राहत पहुंचाने एवं एवरेज डिस्पोजल टाइम में सुधार करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि आमजन को बार बार कार्यालयों के चक्कर नहीं लगाने पड़े, यह सुनिश्चित करते हुए स्थानीय स्तर पर ही संवेदनशीलता के साथ नियमानुसार शीघ्र कार्यवाही करते हुए परिवादों का गुणवत्तापूर्ण निपटारा करें व पोर्टल पर भी जानकारी अपडेट करें। संपर्क पोर्टल पर पंजीकृत शिकायत का 7 दिन में निस्तारण करने के निर्देश दिए।

जिला कलेक्टर ने सार्वजनिक निर्माण विभाग को विभिन्न मार्गों एवं शहर में क्षतिग्रस्त सड़कों की मरम्मत कार्य को गुणवत्ता के साथ पूरा कराने के निर्देश दिए। उन्होंने संबंधित विभाग को सड़क किनारे हो रहे अतिक्रमणों को हटवाने के कार्य को प्राथमिकता से पूर्ण करने के निर्देश दिए जिससे यातायात सुगम हो सके। उन्होंने नगर परिषद के अधिकारियों को टपूकड़ा क्षेत्र में सफाई व्यवस्था को दुरुस्त करने के निर्देश भी दिए।



उन्होंने पशुपालन अधिकारी को मंगला पशु योजना में पंजीकरण की समीक्षा कर निर्धारित लक्ष्य को शत प्रतिशत पूरा करने का निर्देश दिए।

जिला कलक्टर ने पीएचडीडी को नियमित रूप से शुद्ध पेयजल आपूर्ति बनाये रखने, जेजेएम के तहत लक्ष्यनुरूप नल कनेक्शन पूर्ण करने के लिए कहा। उन्होंने समाज कल्याण विभाग को पालनहार व पंशन

सत्यापन शत प्रतिशत पूर्ण करने, विद्युत विभाग को विभागीय योजनाओं के अनुसार पात्र लोगों को लाभान्वित करने एवं प्रस्तावित जीएसएस की प्रगति की समीक्षा भी की। उन्होंने बिजली सप्लाई एवं ट्रांसफार्मर बदलने की अवधि की जानकारी प्राप्त कर तय समय सीमा के भीतर ट्रांसफार्मर बदलने एवं मुचारू सप्लाई उपलब्ध कराने हेतु आवश्यक दिशा निर्देश दिए।

पर्यावरण एवं वन मंत्री ने किया वन प्रशिक्षण केंद्र अलवर का निरीक्षण

जनसुनवाई कर सुनी आमजन की परिवेदनाएं, लाइब्रेरी का भी किया निरीक्षण

जयपुर टाइम्स

अलवर(निस)। पर्यावरण एवं वन राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) संजय शर्मा ने नारायण विलास स्थित वन प्रशिक्षण केंद्र अलवर का निरीक्षण कर प्रशिक्षु वन्यकर्मियों से दिए जा रहे प्रशिक्षण के संबंध में संवाद किया। मंत्री शर्मा ने वन प्रशिक्षण केंद्र का निरीक्षण कर उप वन संरक्षक प्रशिक्षण राजीव लोचन पाठक को निर्देश दिये कि प्रशिक्षण भवन के जीर्णोद्धार के प्रस्ताव तैयार करें ताकि उसकी मरम्मत कर भवन को सुन्दर स्वरूप दिया जा सके। उन्होंने 120वें वनरक्षक प्रशिक्षण बेच के तहत प्रशिक्षण ले रही महिला वनरक्षकों से संवाद कर उन्हें दिए जा रहे प्रशिक्षण के संबंध में जानकारी लेकर कहा कि गहनता से प्रशिक्षण लेवे ताकि फील्ड में अपने दायित्वों का कुशलता से निर्वहन कर सकें। उन्हें प्रोत्साहित करते हुए कहा कि राजकीय सेवा के माध्यम से प्रकृति के संरक्षण का पुनीत दायित्व मिला है इसे सेवाभाव के साथ निष्ठापूर्वक निर्वहन करें। इस दौरान उन्होंने वन प्रशिक्षण केंद्र में पौधारोपण कर पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया।

जनसुनवाई कर परिवेदनाओं के निस्तारण के लिए निर्देश

मंत्री शर्मा ने अपने निवास 201, रघुमार्ग पर जनसुनवाई कर आमजन की परिवेदनाओं को सुनकर संबंधित अधिकारियों को दूरभाष से त्वरित निराकरण करने के लिए निर्देशित किया। जनसुनवाई में पेयजल, नगर निगम, नगर विकास न्यास, विद्युत, पुलिस, स्थानांतरण एवं राजस्व मामलों की परिवेदनाएं प्रमुख रही। उन्होंने नगर निगम आयुक्त को निर्देश दिये कि स्वच्छता सर्वेक्षण में अलवर शहर की रैंकिंग सुधारने हेतु साफ-सफाई व्यवस्था की प्रभावी मॉनिटरिंग करें। साथ ही आमजन को कचरा सेग्रीगेशन आदि के लिए जागरूक करें। उन्होंने जलदाय विभाग के अधीक्षण अभियन्ता को निर्देश दिये कि राज्य सरकार द्वारा स्वीकृत कराई गई सभी बोरिंगों को यथाशीघ्र चालू कर पेयजल प्रभावित क्षेत्रों में आपूर्ति सुनिश्चित करें। परिवेदनाओं के निस्तारण में किसी भी प्रकार की लापरवाही बरते जाने पर सख्त कार्रवाई अमल में लाई जावेगी।



लाइब्रेरी का किया निरीक्षण

उन्होंने एसएमडी सर्किल स्थित भाषा एवं पुस्तकालय विभाग व नंगली सर्किल स्थित सूचना एवं जनसम्पर्क कार्यालय तथा स्वामी विवेकानन्द स्मारक में यूआईटी के माध्यम से तैयार कराई गई डिजिटल लाइब्रेरी का निरीक्षण किया। उन्होंने कहा कि सरकार की मंशा के अनुरूप अलवर सांसद व केंद्रीय मंत्री भूपेन्द्र यादव तथा उनके द्वारा अलवर शहर सहित जिले में युवाओं को डिजिटल एजुकेशन से जोड़ने व अध्ययन हेतु अच्छी

लाइब्रेरी विकसित कराई जा रही है।

शोभायात्रा को झण्डी दिखाकर

किया रवाना

मंत्री शर्मा ने विश्वकर्मा जयंती के शुभ अवसर पर जागिड़ समाज अलवर द्वारा निकाली गई शोभायात्रा को झंडी दिखाकर रवाना किया। उन्होंने भगवान विश्वकर्मा की जयन्ती के अवसर पर कामना की कि उनकी अनुकम्पा उत्तरोत्तर तकनीकी में सुधार से देश में खुशहाली व समृद्धि आए।

आधारभूत संरचना संबंधित समस्त कार्य पूर्ण गुणवत्ता के साथ निर्धारित समय पर संपन्न करावे- जिला कलक्टर

जिला कलक्टर की अध्यक्षता में आधारभूत संरचना की प्रगति की समीक्षा बैठक आयोजित

जयपुर टाइम्स

अलवर(निस)। जिला कलक्टर डॉ. आर्तिका शुक्ला ने सोमवार को संबंधित विभागीय अधिकारियों को निर्देशित किया कि आधारभूत संरचना संबंधित समस्त कार्य पूर्ण गुणवत्ता के साथ निर्धारित समय पर संपन्न करवाना सुनिश्चित करें। जिला कलक्टर डॉ. आर्तिका शुक्ला ने सोमवार को प्रमुखतया नगर निगम, सार्वजनिक निर्माण विभाग, नगर विकास न्यास, विद्युत विभाग, जल संसाधन विभाग, आरएसआरडीसी एवं चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग के 30 लाख रुपए से अधिक लागत के आधारभूत संरचनाओं (इंफ्रास्ट्रक्चर) की प्रगति की समीक्षा बैठक ली। उन्होंने नगर विकास न्यास के कार्यों की समीक्षा कर एसटीपी के पानी के पूर्ण पुनःउपयोग की कार्य योजना बनाकर कार्यवाही करने के निर्देश दिए। इसके अतिरिक्त उन्होंने मोती झूरी के चिल्ड्रन पार्क को आइडियल सर्व सुविधायुक्त चिल्ड्रन पार्क के रूप में विकसित करने, अच्छी गुणवत्ता के सार्इकिल ट्रैक निर्माण करने व शहर में दो सार्वजनिक जगहों पर मरद बेबी फीडिंग रूम तैयार करवाने की निर्देश दिए। उन्होंने नगर निगम के कार्यों की समीक्षा करते हुए नगर निगम आयुक्त को निर्देशित किया कि शहर की वायु गुणवत्ता सुधार हेतु एनकेप (एनसीएपी)



पेंटिंग प्रदर्शनी 'ओडीशी टू माय आर्ट' का हुआ समापन

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कास)। चित्रकार नीतू आहूजा की पेंटिंग प्रदर्शनी 'ओडीशी टू माय आर्ट' का समापन समारोह रविवार को आयोजित किया गया, इस अवसर पर अतिरिक्त आयुक्त खाद्य एवं सुरक्षा विभाग वरिष्ठ आरएएस पंकज ओझा और राजस्थान ललित कला अकादमी के सचिव रजनीश हर्ष मुख्य अतिथि रहे। पंकज ओझा द्वारा प्रदर्शनी के समापन समारोह में एक पेंटिंग को उतार कर प्रदर्शनी का समापन किया गया 7 मीडिया और आए हुए सभी गणमान्य लोगों को संबोधित करते हुए खाद्य आयुक्त पंकज ओझा ने महाकुम्भ पर आधारित कलाकृतियों को सराहा व सनातन धर्म में प्रेम के महत्व के बारे में शिव व श्रीराम जी के जीवन प्रसंग में प्रेम की भूमिका के बारे में बताया। इस अवसर पर कलाकार नीतू आहूजा ने सम्मानीय अतिथिगण का शाल व पौधा देकर सम्मान किया।

रावतसर में कैरियर डे पर विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित

जयपुर टाइम्स

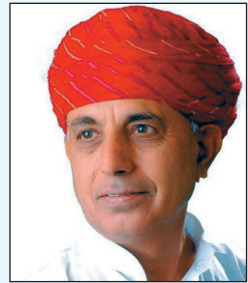


रावतसर(निस)। राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय रावतसर में सोमवार को कैरियर डे पर विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं। प्रधानाचार्य पुष्पा चौधरी ने बताया कि कैरियर डे पर निबंध, क्विज, साक्षात्कार, मांडल प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं, जिसमें विद्यार्थियों ने बड़-चढ़कर भाग लिया। प्रतियोगिताओं में प्रथम, द्वितिय और तृतीय स्थान प्राप्त करने

केन्द्रीय कृषि राज्यमंत्री करेंगे जिले के विकास कार्यों की समीक्षा

जयपुर टाइम्स

किशनगढ़(निस)। केन्द्रीय कृषि एवं किसान कल्याण राज्यमंत्री भार्गुरथ चौधरी बुधवार को जिला विकास समन्वय एवं निगरानी समिति (दिशा) की बैठक की अध्यक्षता करेंगे। यह बैठक जिला परिषद सभागार में होगी, जिसमें विधानसभा अध्यक्ष श्री वासुदेव देवनानी, जल संसाधन



मंत्री सुरेश सिंह रावत, विधायकगण, जिला प्रमुख, नगर निगम मेयर तथा अन्य जनप्रतिनिधि शामिल होंगे। बैठक में विभिन्न सरकारी योजनाओं की समीक्षा की जाएगी, जिनमें मनरेगा, प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना, राष्ट्रीय सामाजिक सहायता कार्यक्रम, प्रधानमंत्री आवास योजना ग्रामीण, स्वच्छ भारत मिशन-ग्रामीण, जल जीवन मिशन, किसान कल्याण योजनाएं, प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना, कृषि अवसरचना निधि योजना सहित अन्य योजनाएं शामिल हैं। इसके अलावा, पंचायती राज मंत्रालय की स्वामित्व योजना, स्मार्ट सिटी मिशन, प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना, प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना, राष्ट्रीय पशु रोग नियंत्रण कार्यक्रम, बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ योजना तथा राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन की प्रगति पर भी चर्चा होगी। जिला कलक्टर लोक बन्धु ने बताया कि बैठक में बुनियादी ढांचे, जल संसाधन, सड़क परिवहन, खेल, शिक्षा, श्रम एवं रोजगार सहित विभिन्न क्षेत्रों से जुड़े कार्यक्रमों की समीक्षा होगी। सभी संबंधित विभागों को बैठक में योजनाओं की प्रगति रिपोर्ट प्रस्तुत करने के निर्देश दिए गए हैं।

नगर निगम ग्रेटर आयुक्त रूकमणि रियाड़ के निर्देश पर सतर्कता शाखा की बड़ी कार्रवाई

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कास)। नगर निगम ग्रेटर की आयुक्त रूकमणि रियाड़ के निर्देशानुसार सतर्कता शाखा ने अस्थायी अतिक्रमण के खिलाफ सख्त कार्रवाई की। उपायुक्त सतर्कता अजय कुमार शर्मा के नेतृत्व में सोमवार को बाई नं. 127, सत्कार शॉपिंग सेंटर, हरि मार्ग, गांधी नगर स्टेशन टोक रोड और लालकोठी मंडी क्षेत्र में अभियान चलाया गया। कार्यवाही के दौरान 07 केन्टर सामान जब्त किया गया और मौके पर ही अस्थायी अतिक्रमण करने वालों से 2 हजार रुपये का कैरिंग चार्ज वसूला गया। जब्त किया गया सामान निगम के गोदाम में भिजवाया गया। उपायुक्त अजय कुमार शर्मा ने बताया कि अतिक्रमणकारियों को मौखिक पाबंद करते हुए समझाइश दी गई कि वे भविष्य में स्वेच्छा से अतिक्रमण हटा लें, अन्यथा भारी जुर्माना या अन्य सख्त कार्रवाई की जाएगी। नगर निगम जयपुर ग्रेटर प्रशासन ने स्पष्ट किया है कि शहर में अवैध अतिक्रमण को किसी भी हाल में बर्दाश्त नहीं किया जाएगा।

नगरीय विकास कर एवं विज्ञापन शुल्क वसूली हेतु शिविर, 46 लाख से अधिक राजस्व प्राप्त

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कास)। नगरीय विकास कर एवं विज्ञापन शुल्क की शत-प्रतिशत वसूली के लिए जलनगर वाईवाईजी शिविरों का आयोजन जारी है। सामान्य को विभिन्न जोंनों में लगे केम्पों में 46 लाख 32 हजार रुपये से अधिक की राजस्व वसूली हुई। मुरलीपुरा जोन में बकाया कर नहीं भरने पर 10 संपत्तियों को कुक किया गया।

जनसुनवाई व सम्पर्क पोर्टल प्रकरणों का समयबद्ध निस्तारण सुनिश्चित करें: जिला कलक्टर

जयपुर टाइम्स

सवाई माधोपुर(निस)। कलेक्ट्रेट परिसर में सोमवार को जिला कलक्टर शुभम चौधरी की अध्यक्षता में आवश्यक सेवाओं की साप्ताहिक समीक्षा बैठक आयोजित हुई।

कलक्टर ने राजस्थान सम्पर्क पोर्टल (सीएम हेल्पलाइन-181) की समीक्षा कर 90 दिन से अधिक लंबित शिकायतों के तत्काल निस्तारण के निर्देश दिए। उन्होंने सभी उपखण्ड अधिकारियों से जनसुनवाई में प्राप्त परिवादों का एक सप्ताह में समाधान सुनिश्चित करने को कहा। राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा योजना के तहत पात्र आवेदनों की 1 माह में जांच



मुख्यमंत्री अनुप्रति कोचिंग योजना की अंतिम तिथि बढ़ाई, अब 15 तक कर सकेंगे आवेदन

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कास)। सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्री अविनाश गहलोत के निर्देश पर विभाग ने मुख्यमंत्री अनुप्रति कोचिंग योजना में ऑनलाइन आवेदन की तिथि को बढ़ाकर 15 फरवरी कर दिया है। मुख्यमंत्री अनुप्रति कोचिंग योजना के तहत विभिन्न प्रोफेशनल कोर्स के लिए आयोजित प्रवेश परीक्षाओं एवं सरकारी नौकरियों के लिए आयोजित होने वाली प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी उत्कृष्ट ढंग से कराने एवं समान अवसर प्रदान करने के लिए विभाग द्वारा ऑनलाइन पोर्टल पर सूचीबद्ध कोचिंग संस्थानों में निःशुल्क कोचिंग करने हेतु इच्छुक अर्थार्थियों से वर्ष 2024-25 के लिए

ऑनलाइन आवेदन किये जाने की तिथि पूर्व में 1 से 10 फरवरी 2025 निर्धारित की गई थी।निदेशक एवं संयुक्त शासन सचिव, सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग बचनेश अग्रवाल ने बताया कि इच्छुक अर्थार्थी निःशुल्क कोचिंग करने के लिए ऑनलाइन आवेदन किये जाने की पूर्व में निर्धारित अंतिम तिथि को 15 फरवरी 2025 तक बढ़ा दिया गया है। श्री अग्रवाल ने बताया कि इच्छुक अर्थार्थी अपना आवेदन SSO Portal (https:// sso. rajasthan. gov.in) पर लॉग-इन कर CM Anuprati Coaching आइकन के माध्यम से 15 फरवरी 2025 तक विभाग को ऑनलाइन किये जा सकते हैं।

महाराजा सूरजमल के जन्मदिवस के अवसर पर विशाल मूर्ति का किया जायेगा आवरण

जयपुर टाइम्स

डींग(निस)। गांव मुढेरा, पथरोडा और नंदगाँव मथुरा में महाराजा सूरजमल की जयंती पर 31 फिट ऊंची विशाल मूर्ति का आवरण किया जाएगा उसके उपलक्ष्य में आज महाराजा सूरजमल यूथ ब्रिगेड कार्यालय डींग पर मुढेरा, पथरोडा और नंदगाँव मथुरा की सरदारी ने निमंत्रण दिया एवं आस पास के गांवों में भी जाकर निमंत्रण दिया। इस मौके पर प्रदेश अध्यक्ष सुमित सिनसिनवार,पूर्व प्रदेश अध्यक्ष महेश पहलवाडा, नरेश पहलवाडा,सुनील चारह महमदपुर, रब्बो नन्दगांव, जीतू चौधरी ,राजवीर चौधरी,हेतराम मुढेरा ,जिला अध्यक्ष बी के फौजदार, जिला महासचिव पदम महमदपुर सहित आदि कार्यकर्ता मौजूद रहे।



पूर्व केंद्रीय मंत्री कैलाश चौधरी की जनसुनवाई कल, आमजन रख सकेंगे अपनी समस्याएँ

जयपुर टाइम्स

बाड़मेर। पूर्व केंद्रीय मंत्री और बाड़मेर-जैसलमेर के पूर्व सांसद कैलाश चौधरी आमजन की समस्याओं के समाधान हेतु जनसुनवाई आयोजित करेंगे। यह कार्यक्रम मंगलवार सुबह 7:00 बजे से 10:00 बजे तक दुर्गा रेजिडेंसी, ह्रस् मोटर के सामने, चौहटन रोड, बाड़मेर में होगा। इस दौरान क्षेत्र के

नागरिक और कार्यकर्ता किसान कल्याण, रोजगार, बिजली, पानी, स्वास्थ्य, शिक्षा सहित जनहित से जुड़े मुद्दों पर अपनी समस्याएँ और सुझाव रख सकेंगे। चौधरी ने कहा कि वे जनता की आवाज सरकार और प्रशासन तक पहुँचाने के लिए प्रतिबद्ध हैं। जनसुनवाई में बड़ी संख्या में लोगों के शामिल होने की उम्मीद है, जिससे क्षेत्र की समस्याओं का प्रभावी समाधान निकल सकेगा।

जागिड़ विश्वकर्म सेवा समिति की ओर से भगवान विश्वकर्म की जयंती मनाई

जयपुर टाइम्स

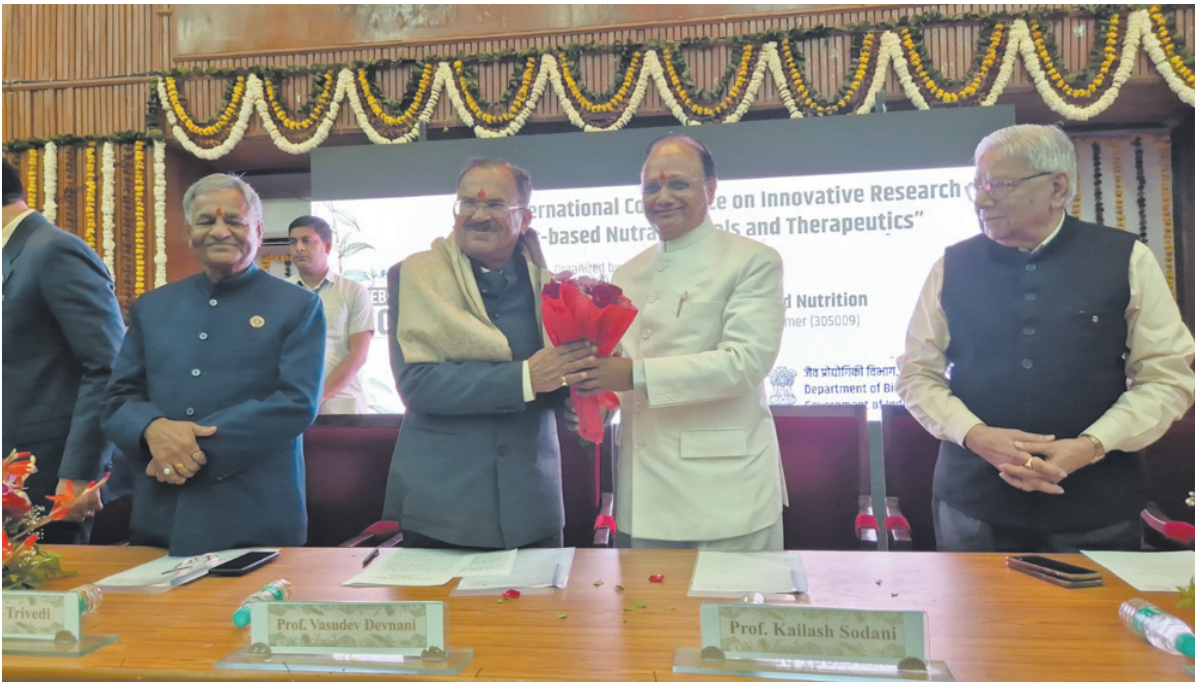
सांभरलेक(निस)। जागिड़ विश्वकर्म सेवा समिति की ओर से भगवान विश्वकर्म की जयंती मनाई गई। नवल किशोर जागिड़ ने बताया कि देवयानी स्थित विश्वकर्म मंदिर में सुबह मंगला आरती के बाद हवन यज्ञ किया गया। वहीं खेलकूद प्रतियोगिता आयोजित की गई जिसमें निबंध, बैलून, म्यूजिकल चेयर, चम्मच दौड़, प्रश्नोत्तरी, मेहंदी, टंग टिक्स्टर, रस्साकसी आदि में बच्चों ने उत्साह दिखाया। इस दौरान रामलाल हर्षवाल को समाज का पुनः अध्यक्ष चुना गया।

इस अवसर पर सुरेंद्र हर्षोलिया, मोहित, इंद्रप्रकाश जागिड़, रामधन जागिड़, रामावतार गोपालपुरा, एडवोकेट नितेश जागिड़, सोहन



जागिड़ सहित कई समाजबंधु मौजूद रहे। इससे पूर्व रविवार रात्रि में जागरण का आयोजन किया गया।

अजमेर में अंतरराष्ट्रीय वैज्ञानिक सम्मेलन: प्राकृतिक औषधियों पर शोध को बढ़ावा



जयपुर टाइम्स

जयपुर(कास)। महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, अजमेर में राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी एवं जैव प्रौद्योगिकी विभाग, भारत सरकार के सहयोग से पादप आधारित न्यूट्रास्यूटिकल्स और चिकित्सा पर नवीन अनुसंधान विषय पर अंतरराष्ट्रीय वैज्ञानिक सम्मेलन आयोजित किया गया।

विधानसभा अध्यक्ष वासुदेव देवनानी ने उद्घाटन किया और कहा कि प्राकृतिक औषधियाँ वैश्विक स्वास्थ्य चुनौतियों का समाधान बन सकती हैं। उन्होंने प्राचीन एवं आधुनिक चिकित्सा पद्धतियों के समन्वय की आवश्यकता पर जोर दिया। सम्मेलन में पूर्व कुलपति प्रो. पी.सी. त्रिवेदी, कुलपति प्रो. कैलाश सोडानी, वनस्पति विज्ञान विभागाध्यक्ष प्रो. अरविंद पारीक समेत कई वैज्ञानिक और शोधकर्ता शामिल हुए। प्राकृतिक पौधों के औषधीय गुणों पर शोध की

आवश्यकता को रेखांकित किया गया।

प्रो. त्रिवेदी ने कहा कि आहार और पोषण रोग निवारण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, जबकि प्रो. वर्मा ने विज्ञान के ग्रामीण विकास में योगदान पर प्रकाश डाला। सम्मेलन में 120 शोध पत्रों पर चर्चा हुई और वैज्ञानिक पत्रिका विज्ञान रश्मि का विमोचन भी हुआ। आयोजकों ने सम्मेलन को सफल बनाने के लिए सभी प्रतिभागियों और अतिथियों का आभार व्यक्त किया।

बाड़मेर में एसडीएम द्वारा चिकित्सक के साथ किये गये कथित दुर्व्यवहार का मामला



राजकीय संस्थाओं में अधिकारियों व कर्मचारियों में बढ़ता आक्रोश

जयपुर टाइम्स

कोटपूतली(निस)। विगत दिनों बाड़मेर जिले के सेडवा में एसडीएम बलवीर विशनोई द्वारा स्थानीय राजकीय सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र में तैनात एक चिकित्सक के साथ कथित तौर पर किये गये दुर्व्यवहार का मामला लगातार गहराता ही जा रहा है। उल्लेखनीय है कि उक्त घटना में एसडीएम द्वारा जिस चिकित्सक के साथ दुर्व्यवहार किया गया, वे कोटपूतली की ग्राम पंचायत अमाई की ढाणी रावतों वाली के निवासी डॉ.

रामस्वरूप गुर्जर हैं। प्रकरण में एक और जहाँ अखिल राजस्थान सेवारत चिकित्सक संघ द्वारा निरन्तर विरोध कर उक्त एसडीएम के विरुद्ध कार्यवाही की मांग की जा रही है। वहीं दुसरी ओर पंडित चिकित्सक के कोटपूतली के नागरिक होने के चलते यहाँ आमजन व अन्य विभागों के अधिकारियों व कर्मचारियों में भी नाराजगी व आक्रोश देखा जा रहा है। इसी क्रम में राजकीय कन्या महाविधालय कोटपूतली के कर्मचारियों व अधिकारियों ने घटना का विरोध प्रदर्शन करते हुये कार्यवाही की मांग की। प्रो. जगमम गुर्जर ने बताया कि कर्मचारियों व अधिकारियों ने कार्यालय में गरीमापूर्ण व्यवहार बनाये रखने का आह्वान करते हुये कथित

एसडीएम के विरुद्ध कड़ी विभागीय कार्यवाही की मांग की। वहीं दुसरी ओर विभिन्न संस्थाओं में भी अधिकारियों-कर्मचारियों ने विरोध प्रदर्शन किया। ग्राम गोनेड़ा स्थित महात्मा गाँधी राजकीय उच्च माध्यमिक विधालय, ग्राम रहेड़ा स्थित राजकीय उच्च माध्यमिक विधालय में भी काली पट्टी बांधकर कार्य करते हुये विरोध दर्ज कराया गया। इसी प्रकार राजकीय उच्च माध्यमिक विधालय पावटा में भी स्टॉफ सदस्यों ने काली पट्टी बांधकर कार्य किया। प्रदर्शनकारी कार्मिकों का कहना था कि इस प्रकार का दुर्व्यवहार किसी भी सुरत में बर्दाश्त नहीं किया जा सकता।

संपादकीय✍

भारत ने विभिन्न क्षेत्रों में प्राप्त की हैं असाधारण उपलब्धियां

दिनांक 31 जनवरी 2025 को देश की राष्ट्रपति आदरणीया श्रीमती द्रौपदी मुर्मू ने लोक सभा एवं राज्य सभा के संयुक्त अधिवेशन को अपने सम्बोधन में, हाल ही के समय में, भारत में विभिन्न क्षेत्रों में प्राप्त की गई उपलब्धियों के बारे में विस्तृत जानकारी देते हुए कहा है कि «भारत की विकास यात्रा के इस अमृतकाल को आज मेरी (केंद्र) सरकार अभूतपूर्व उपलब्धियों के माध्यम से नई ऊर्जा दे रही है। तीसरे कार्यकाल में तीन गुना तेज गति से काम हो रहा है। आज देश बड़े निर्णयों और नीतियों को असाधारण गति से लागू होते देख रहा है। और, इन निर्णयों में देश के गरीब, मध्यम वर्ग, युवा, महिलाओं, किसानों को सर्वोच्च प्राथमिकता मिली है।» आदरणीया श्रीमती द्रौपदी मुर्मू द्वारा दिए गए उक्त भाषण में अंशों को जोड़कर इस लेख में यह बताने का प्रयास किया गया है कि किस प्रकार भारत में गरीब वर्ग, युवाओं, मातृशक्ति, किसानों, आदि के लिए विभिन्न योजनाएं सफलतापूर्वक चलाई जा रही हैं।

आज आम नागरिकों की मूलभूत आवश्यकताओं रोटी, कपड़ा और मकान के साथ साथ स्वास्थ्य एवं शिक्षा पर भी विशेष ध्यान दिया जा रहा है। समस्त परिवारों को आवास सुविधा उपलब्ध कराने के लिए ठोस कदम उठाए जा रहे हैं। प्रधानमंत्री आवास योजना का विस्तार करते हुए तीन करोड़ अतिरिक्त परिवारों को नए घर देने का निर्णय लिया गया है। इसके लिए 5 लाख 36 हजार करोड़ रुपए की राशि का खर्च किए जाने की योजना है। इसी प्रकार, गांव में गरीबों को उनकी आवासीय भूमि का हक देने के उद्देश्य से स्वामित्व योजना के अंतर्गत अभी तक 2 करोड़ 25 लाख सम्पत्ति कार्ड जारी किए जा चुके हैं। साथ ही, पीएम किसान सम्मान निधि योजना के अंतर्गत लगभग 11 करोड़ किसानों को पिछले कुछ महीनों में 41,000 करोड़ रुपए की राशि का भुगतान किया गया है। जनजातीय समाज के पांच करोड़ नागरिकों के लिए «धरती आबा जनजातीय ग्राम उत्कर्ष» अभियान प्रारंभ हुआ है। इसके लिए अस्सी हजार करोड़ रुपये की राशि का प्रावधान किया गया है। आज मध्यम वर्ग को मकान/प्लैट खरीदने के लिए लोन पर सब्सिडी भी दी जा रही है एवं रेरा जैसा कानून बनाकर मध्यम वर्ग के स्वयं के मकान सम्बंधी सपने को सुरक्षा दी गई है।

देश के नागरिकों को स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध कराए जाने के उद्देश्य से आयुष्मान भारत योजना चलाई जा रही है। अब इस योजना के अंतर्गत 70 वर्ष और उससे अधिक उम्र के 6 करोड़ वरिष्ठ नागरिकों को स्वास्थ्य बीमा देने का निर्णय लिया गया है। इन वरिष्ठ नागरिकों को प्रत्येक वर्ष में पांच लाख रुपए का स्वास्थ्य बीमा उपलब्ध कराया जाएगा। केंद्र सरकार द्वारा आज युवाओं की शिक्षा और उनके लिए रोजगार के नए अवसर तैयार करने पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है। मेधावी छात्रों को उच्च शिक्षा में वित्तीय सहायता देने के लिए पीएम विद्यालक्ष्मी योजना शुरू की गई है। एक करोड़ युवाओं को शीर्ष पांच सौ कंपनियों में इंटरशिप के अवसर भी दिये जाएंगे। पेपर लीक की घटनाओं को रोकने और भर्ती में पारदर्शिता सुनिश्चित करने के लिए नया कानून लागू किया गया है।

दिल्ली में आम आदमी पार्टी का किला बुरी तरह ढह गया है। आतिशी को छोड़कर पार्टी के लगभग तमाम दिग्गज नेता चुनाव हार गए और आप ने इस बार दिल्ली विधानसभा चुनावों में अपना सबसे खराब प्रदर्शन किया। 2015 में आम आदमी पार्टी ने 67 सीटें जीती थी लेकिन 2020 में यह संख्या घटकर 62 रह गई थी। वहीं, भाजपा ने 2015 में मात्र 3 सीटें जीती थी जबकि 2020 में 8 सीटें जीतने में सफल हुई थी और बंपर जीत के साथ पूरे 27 सालों बाद अब दिल्ली में सरकार बनाने में सफल हुई है। 27 साल पहले भाजपा की सुषमा स्वराज आखिरी बार कुल 52 दिन के लिए दिल्ली की मुख्यमंत्री रही थी और अब 27 साल बाद दिल्ली में भाजपा की सत्ता में बड़ी वापसी हुई है। भ्रष्टाचार के खिलाफ आंदोलन से निकली आम आदमी पार्टी पर घोटाले के गंभीर आरोप लगे थे और यह विधानसभा चुनाव इस बार आम आदमी पार्टी के लिए नाक का बहुत बड़ा सवाल था लेकिन भाजपा ने आम आदमी पार्टी को दिल्ली में जीत का चौका लगाने से रोक दिया। ऐसे में बड़ा सवाल यही है कि आखिर आम आदमी पार्टी की इतनी बड़ी हार के पीछे क्या प्रमुख कारण रहे और क्यों पार्टी की राजनीतिक स्थिति इतनी कमजोर हुई?

दिल्ली में आप सरकार ने करीब एक दशक तक शासन किया और लंबे समय तक सत्ता में रहने के कारण जनता के बीच असंतोष और बदलाव की इच्छा बढ़ी थी। विभिन्न क्षेत्रों में विकास कार्यों की कमी, बुनियादी सुविधाओं की अनदेखी और वादों को पूरा न करने के आरोपों ने सत्ता विरोधी लहर को मजबूत किया, जिसके परिणामस्वरूप मतदाताओं ने विकल्प के रूप में भाजपा की ओर रुख किया। अरविंद केजरीवाल ने यमुना को साफ करने, दिल्ली की सड़कों को पेरिस जैसा बनाने और साफ पानी उपलब्ध कराने जैसे जो तीन प्रमुख वादे दिल्ली की जनता से किए थे, वे एक दशक में भी पूरे नहीं हुए। पूर्व मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल, पूर्व उपमुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया, सत्येंद्र जैन, सांसद संजय सिंह इत्यादि पार्टी के शीर्ष नेताओं पर लगे भ्रष्टाचार के आरोपों और उनकी गिरफ्तारी ने पार्टी की छवि को गंभीर नुकसान पहुंचाते हुए ‘आप’ की भ्रष्टाचार विरोधी छवि को कमजोर किया। इन घटनाओं ने पार्टी की स्वच्छ राजनीति के दावे पर सवाल खड़े किए और जनता के विश्वास को कमजोर किया। खासतौर से केजरीवाल की गिरफ्तारी और बाद में उनके इस्तीफे के कारण पार्टी के नेतृत्व में



अस्थिरता आई और केजरीवाल की विश्वसनीयता में बड़ी कमी आई। केजरीवाल ने हमेशा से वीआईपी कल्चर पर सवाल उठाए थे लेकिन शीशमहल के मुद्दे पर वे स्वयं ‘वीआईपी कल्चर’ के मुद्दे पर बुरी तरह घिर गए थे, भाजपा-कांग्रेस ने इस मुद्दे को लेकर आप को घेरने में कोई कसर बाकी नहीं छोड़ी। राजनीति में आने से पहले केजरीवाल ने कहा था कि वो वीवीआईपी कल्चर को खत्म करेंगे, गाड़ी, बंगला और सुरक्षा लेने की बात से भी उन्होंने इनकार किया था लेकिन सत्ता मिलने के बाद उन्होंने लज्जती गाड़ियां तो ली ही, केंद्र से जेड प्लस सुरक्षा मिलने के बावजूद पंजाब सरकार की शीर्ष सुरक्षा भी ली।

पार्टी के भीतर आंतरिक कलह और नेतृत्व के मुद्दों ने भी आप की हार में बड़ा योगदान दिया। कई वरिष्ठ नेताओं के पार्टी छोड़ने या निष्क्रिय होने से संगठनात्मक ढांचे में कमजोरी आई। इसके अलावा नेतृत्व के प्रति असंतोष और निर्णय लेने में पारदर्शिता की कमी ने कार्यकर्ताओं और समर्थकों के मनोबल को प्रभावित किया। आप सरकार ने बिजली, पानी और अन्य सुविधाओं में मुफ्त सेवाओं की घोषणा की थी लेकिन विपक्ष ने इसे ‘रेवडी संस्कृति’ कहकर आलोचना करते हुए इसे आर्थिक रूप से अव्यवहारिक बताया। इसके अलावा, इन योजनाओं के प्रभावी कार्यान्वयन में आई समस्याओं ने जनता के बीच नकारात्मक धारणा बनाई, जिससे ‘आप’ की लोकप्रियता में गिरावट आई। दिल्ली में सड़क, परिवहन और स्वच्छता के क्षेत्रों जैसे बुनियादी ढांचे के विकास में अपेक्षित प्रगति नहीं हो पाई। इसके अलावा प्रदूषण, जलभराव और कूड़े के ढेर जैसी समस्याओं का समाधान नहीं होने से जनता में

आखिर दिल्ली में क्यों ढहा ‘आप’ का किला?

केजरीवाल सरकार के प्रति नाराजगी बढ़ी थी। इन मुद्दों पर सरकार की निष्क्रियता ने मतदाताओं को निराश किया। दिल्ली में आप की लोकप्रियता का सबसे बड़ा कारण मुफ्त बिजली-पानी जैसी योजनाओं को माना जाता रहा लेकिन चुनाव के दौरान भाजपा ने भी ‘आप’ वाला ही दांव खेला और अपने चुनावी संकल्पों में महिलाओं, बच्चों व युवाओं से लेकर ऑटो रिक्शा चालकों तक के लिए बड़ी-बड़ी घोषणाएं तो की ही, साथ ही यह ऐलान भी किया कि वह सत्ता मिलने पर आप द्वारा चलाई जा रही तमाम योजनाओं को जारी करेंगी। भाजपा की इन घोषणाओं से आप की चुनौती बहुत बढ़ गई थी।

विपक्ष और खासकर भाजपा की मजबूत रणनीति तथा भाजपा का मुखर प्रचार आप के लिए सबसे बड़ी चुनौती बना। भाजपा ने आप सरकार की तमाम कमजोरियों को उजागर करने में सक्रिय भूमिका निभाई। कांग्रेस ने भी इस तरह टिकट बांटे, जिसने कई सीटों पर आप को आसान जीत से रोकने में अहम भूमिका निभाई। भ्रष्टाचार, विकास की कमी और अन्य मुद्दों पर केंद्रित अभियानों ने जनता के बीच आप के प्रति नकारात्मक धारणा बनाई। भाजपा ने सामाजिक और धार्मिक मुद्दों को भी पुरजोर तरीके से उठया, जिससे आप के समर्थन में बड़ी कमी आई। चुनाव से पहले कांग्रेस और आप के बीच गठबंधन की चर्चाएं थी लेकिन हरियाणा विधानसभा में दोनों के बीच गठबंधन नहीं होने के कारण दिल्ली में भी दोनों दलों के बीच गठबंधन नहीं हो सका, जिसके चलते विपक्षी मतों का विभाजन हुआ और इसका सीधा लाभ भाजपा को मिला। कांग्रेस के साथ गठबंधन नहीं करने के फैसले ने आप की

रणनीतिक कमजोरी को उजागर किया और विपक्षी एकता की कमी का स्पष्ट संकेत दिया। इसका भी दिल्ली के मतदाताओं पर विपरीत प्रभाव पड़ा। पिछले दो विधानसभा चुनाव में कांग्रेस ने एक भी सीट नहीं जीती थी। 2015 में कांग्रेस को 9.7 प्रतिशत मत मिले थे लेकिन 2020 में मतों का प्रतिशत गिरकर महज 4.3 फीसद रह गया था लेकिन इस बार कांग्रेस के मत प्रतिशत में जो बढ़ोतरी हुई है, उसका नुकसान भी आप को भुगतना पड़ा है।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अपनी हर चुनावी सभा में ‘आप’ को ऐसी ‘आपदा’ करार देते हुए भाजपा कार्यकर्ताओं में जोश भरने का भरपूर प्रयास किया, जिसने जनता के फायदे के लिए मिलने वाली केंद्र की प्रत्येक जनकल्याणकारी योजना को दिल्ली में लागू नहीं होने दिया, उससे मतदाताओं के बीच आप की छवि पर विपरीत प्रभाव पड़ा और प्रधानमंत्री के ‘आपदा’ वाले नारे से भाजपा कार्यकर्ताओं का जोश कई गुना बढ़ा। दिल्ली की आबादी में पूर्वांचल (बिहार, पूर्वी उत्तर प्रदेश, झारखंड) से आए लोगों की महत्वपूर्ण हिस्सेदारी है और विपक्ष ने इस समुदाय की समस्याओं को नजरअंदाज करने के आरोप लगाते हुए आप सरकार को इस मुद्दे पर घेरने में कोई कसर नहीं छोड़ी। छठ पूजा के दौरान यमुना नदी में जहरीले झाग की समस्या, आयुष्मान भारत योजना को दिल्ली में लागू नहीं होने देना, बुनियादी सुविधाओं की कमी जैसे मुद्दों ने पूर्वांचली समुदाय में असंतोष बढ़ाया। इस उपेक्षा के कारण इस समुदाय का समर्थन आप से हटकर अन्य दलों की ओर गया और इसका नुकसान आप को भुगतना पड़ा। बहरहाल, केजरीवाल का दावा था कि वे राजनीति में नैतिकता और शुचितता की राजनीति करने आए हैं लेकिन उन्होंने दूसरे राज्यों के चुनावों में जिस तरह से पैसा खर्च किया और दिल्ली में कोरोना काल के दौरान करोड़ों रुपये खर्च कर जो ‘शीशमहल’ बनवाया, उसे लेकर उन पर लगातार लगते रहे आरोपों का पार्टी के पास ही कोई कारगर जवाब नहीं था। देश को भ्रष्टाचार मुक्त करने के बड़े-बड़े दावों के बीच शराब घोटाले जैसे भ्रष्टाचार के छोटें, केजरीवाल की तानाशाहीपूर्ण नेतृत्व शैली, उनका अडिग रहैया, इस तरह की बातों से मतदाताओं का केजरीवाल से मोहभंग होता गया और भाजपा एक मजबूत विकल्प के रूप में उभरती गई।

- ललित गर्ग

-ये लेखक के व्यक्तिगत विचार हैं

समसामयिक

आखिर तीसरे मोर्चे के सियासी तीरंदाजों का राजनीतिक भविष्य अब क्या होगा?

दिल्ली विधानसभा चुनाव 2025 के दौरान भाजपा और कांग्रेस विरोधी क्षेत्रीय दलों ने जो पारस्परिक एकजुटता दिखाई, उससे भी यहां पिछले 12 वर्षों तक सत्तारूढ़ रही आम आदमी पार्टी यानी %आप% की सियासी भलाई संभव नहीं हो पाई और भाजपा नीत एनडीए के हाथों %आप% को करारी चुनावी मात मिली। इस चुनाव में 70 सदस्यीय दिल्ली विधानसभा की 48 सीटों पर जहां भाजपा ने बाजी मारी, वहीं आप को उसने महज 22 सीटों पर ही समेट दिया।

वहीं, दिल्ली पर सत्तारूढ़ रही इंडिया गठबंधन की सहयोगी %आप% की रणनीति ही ऐसी मारक रही कि देश की प्रमुख विपक्षी पार्टी कांग्रेस का यहां तीसरी बार भी खाता नहीं खुलने दिया, जिससे उसके रणनीतिकारों की राजनीतिक पेशानी पर बल पड़ना स्वाभाविक है। बता दें कि 2015, 2020 और 2025 के दिल्ली विधानसभा चुनावों में कांग्रेस को एक भी सीट पर चुनावी सफलता नहीं मिल पाई है, जबकि उसकी शीला दीक्षित सरकार ने डेढ़ दशक तक यहां शासन किया है और दिल्ली के बहुमुखी विकास में उल्लेखनीय भूमिका अदा की है।

दरअसल, यह सब कुछ अनायास नहीं हुआ बल्कि भाजपा की एक सोची-समझी गुप्त रणनीति के तहत किया गया, जिसे अपनी-अपनी राजनीतिक जमीन बनाने के चक्र में आप और कांग्रेस नहीं समझ पाई। साथ ही, कांग्रेस के नेतृत्व वाले इंडिया गठबंधन में शामिल क्षेत्रीय दलों ने भी आप और कांग्रेस के बीच लोकसभा चुनाव 2024 के आए परिणामों के बाद से दिल्ली-पंजाब में चौड़ी हो रही सियासी खाई को पाटने में दिलचस्पी नहीं दिखाई, बल्कि आप की खुली तरफदारी करके कांग्रेस को नीचा दिखाने का काम किया। इससे भी बात बनते बनते बिगड़ गई।

बता दें कि दिल्ली के पड़ोसी राज्य उत्तरप्रदेश की प्रमुख विपक्षी समाजवादी पार्टी यानी सपा के मुखिया व पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव, पश्चिम बंगाल की सत्तारूढ़ तृण मूल कांग्रेस यानी टीएमसी की सुप्रियो व मुख्यमंत्री ममता बनर्जी, महाराष्ट्र की विपक्षी पार्टी शिवसेना यूबीटी के आलाकामान उद्धव भाऊ ठाकरे, एनसीपी शरद पवार के प्रमुख शरद पवार आदि ने अपने-अपने सूबे में जारी कांग्रेस के सियासी दांवपेचों से खार खाते हुए दिल्ली विधानसभा चुनावों में आप की खुली तरफदारी की, जिससे कांग्रेस का मुस्लिम-



दलित वोट बैंक आप के साथ जुड़ा रहा। इससे दिल्ली में कांग्रेस को तीसरी बार भी जीरो पर समेटने में %आप% सफल रही। गौरतलब है कि लोकसभा चुनाव 2024 से पहले कांग्रेस के नेतृत्व में बने %इंडिया गठबंधन% में आप बहुत ही दिल्ली में शामिल रही, लेकिन पंजाब में उसने दोस्ताना मुकाबला किया। फलाफल यह निकला कि दिल्ली की कुल 7 लोकसभा सीटों में से आप के हिस्से वाली 3 सीटों पर और कांग्रेस के हिस्से वाली 4 सीटों पर भाजपा ने दोनों पार्टियों को जबरदस्त शिकस्त दी। वहीं, पंजाब में हुए दोस्ताना टक्कर के दौरान वहां सत्तारूढ़ %आप% पर कांग्रेस भारी पड़ी, क्योंकि पंजाब के 14 लोकसभा सीटों में से आप को जहां मात्र 3 सीटों पर जीत मिली, वहीं कांग्रेस ने 7 सीटों पर अपना कब्जा जमा लिया। जो आप नेताओं को नागवार गुजरा। जबकि कांग्रेस ने अपनी सुबाई नेतृत्व की पीठ थपथपाई, जिसने अडिगल रूख दिखलाकर आप-कांग्रेस में आत्मघाती राजनीतिक समझौता नहीं होने दिया और आप पर दुगुनी से ज्यादा बढ़त हासिल करके दिखला दिया।

समझा जाता है कि यहीं से कांग्रेस और आप में पुनः राजनीतिक दूरी बननी शुरू हो गई, क्योंकि पंजाब में कांग्रेस की रीति-नीति ही वहां पर सत्तारूढ़ आप की भगवंत मान सिंह सरकार के लिए गम्भीर खतरा बन सकती है। चूंकि कांग्रेस ही पंजाब में मुख्य विपक्षी पार्टी है, इसलिए उसके साथ आप की राजनीतिक मित्रता का पंजाब के लोगों के बीच गलत संदेश जा सकता है। वहीं, दिलचस्प बात यह है कि चाहे दिल्ली हो या पंजाब, आप ने कांग्रेस को सियासी शिकस्त देकर ही सत्ता पाई है। इसलिए दोनों में महज भाजपा विरोधी धर्मनिरपेक्षता के सवाल पर दोस्ती की गुंजाइश बनाना आप के लिए

आत्मघाती रणनीति हो सकती है। कुछ यही सोचकर आप ने दिल्ली में एकला चलने का निर्णय लिया और इंडिया गठबंधन के क्षेत्रीय दलों को कांग्रेस विरोध के नाम पर अपने पाले में कर लिया। हालांकि, जम्मू-कश्मीर के मुख्यमंत्री और नेशनल कांफ्रेंस नेता उमर अब्दुल्ल ने इस मामले में कांग्रेस-आप समेत इंडिया गठबंधन के विभिन्न घटक दलों को समय रहते ही आगाह कर दिया था, लेकिन उनकी दूरदर्शितापूर्ण सलाह की सबने अनदेखी की। यही वजह है कि आप व कांग्रेस की उम्मीदों के विपरीत चुनाव परिणाम मिलने पर उन्होंने सटीक टिप्पणी की कि «जी भरकर लड़ो, खसम कर दो एक दूसरे को।»

कहने का तात्पर्य यह कि उमर अब्दुल्ल चाहते हैं कि इंडिया गठबंधन के घटक दलों को साथ मिलकर चुनाव लड़ना चाहिए, क्योंकि घटक दलों के आपस में लड़ने से भाजपा को फायदा मिल रहा है। चूंकि पश्चिम बंगाल में ममता बनर्जी की तरह जम्मू-कश्मीर में भी उमर अब्दुल्ल ने भाजपा को रोका है, इसलिए उनकी बातों का अपना महत्व है। इधर शिवसेना यूबीटी प्रवक्ता संजय राउत ने भी कहा है कि दिल्ली में कांग्रेस और आप मिलकर लड़ते तो परिणाम अलग होते। भाजपा की हार तय थी।

उधर, माकपा नेता टीपी रामकृष्णन ने आरोप लगाया कि कांग्रेस ने इंडिया गठबंधन के प्रभावी समन्वय के लिए कदम नहीं उठाए। इनकी बातों में दम है क्योंकि दिल्ली विधानसभा चुनाव के दौरान कांग्रेस विरोधी क्षेत्रीय दल आप को समर्थन देने लगे तो कांग्रेस की ओर से बयान आया कि इंडिया गठबंधन सिर्फ लोकसभा चुनाव के लिए था।

-प्रहलाद सबनानी

-ये लेखक के व्यक्तिगत विचार हैं

शख्सियत

राजस्थान की सियासत का बड़ा नाम थे राजेश पायलट, कभी घर-घर जाकर बेचते थे दूध



राजस्थान की सियासत में कांग्रेस नेता राजेश पायलट का नाम आज भी सम्मान से लिया जाता है। आज ही के दिन यानी की 10 फरवरी को राजेश पायलट का जन्म हुआ था। राजेश पायलट अपने बलबूते कई बार सांसद और पूर्व केंद्रीय मंत्री रहे थे। उन्होंने देश में अपनी छवि किसान नेता के रूप में बनाई थी। वहीं उनका पूरा परिवार सूबे की सियासत में सक्रिय है। तो आइए जानते हैं उनकी बर्थ एनिवर्सरी के मौके पर राजेश पायलट के जीवन से जुड़ी कुछ रोचक बातों के बारे में...

जन्म और शिक्षा

गौतमबुद्ध नगर जिले के वेदपुर गांव में 10 फरवरी 1945 को राजेश पायलट का जन्म हुआ था। इनके पिता का नाम राजेश्वर प्रसाद बिधूड़ी था। वहीं पिता की मौत के बाद राजेश घर-घर जाकर दूध बेचने का काम करते थे। काम के साथ-साथ वह दिल्ली के अग्रेजी मीडियम म्यूनिसिपल बोर्ड स्कूल में पढ़ाई करते थे। फिर साल 1974 में राजेश पायलट ने रमा पायलट को अपनी जीवनसांगिनी बनाया।

वायुसेना से सियासत तक का सफर

बता दें कि साल 1971 में राजेश पायलट ने भारत-पाक युद्ध में भारतीय वायुसेना की तरफ से अहम भूमिका निभाई थी। वहीं देश सेवा के बाद राजेश पायलट ने वायु सेना से इस्तीफा देकर सियासत में प्रवेश किया था।

राजनीतिक जीवन

वहीं साल 1980 में राजेश पायलट ने पहली बार भरतपुर लोकसभा क्षेत्र से चुनाव लड़ा था। इस सीट पर चुनाव जीतकर सांसद बने। फिर साल 1984 में वह दौसा से सांसद चुने गए। इसके बाद देश के तत्कालीन पीएम राजीव गांधी ने राजेश पायलट को केंद्रीय मंत्री बनाया। वहीं साल 1991 से लेकर 1999 तक उन्होंने लगातार दौसा सीट पर जीत बनाए रखी। फिर साल 1991, 1996, 1998 और 1999 के चुनाव में जीत हासिल कर वह 20 साल तक सांसद रहे।

मृत्यु

वहीं 11 जून 2000 को भंडाना गांव के पास सड़क दुर्घटना में राजेश पायलट की मृत्यु हो गई।



विरासत में मिला क्रिकेट छोड़ क्यों बॉलीवुड में आए अंगद बेदी

भारतीय क्रिकेट कप्तान रहे विराट सिंह बेदी के बेटे अंगद बेदी को उनकी फिल्मों से फैंस पहचानते हैं। विरासत में मिला क्रिकेट छोड़ अंगद ने बॉलीवुड में अपना सिक्का आजमाने की कोशिश की है। आइए उनके जन्मदिन के खास दिन पर आपको बताते हैं उनकी निजी जिंदगी से लेकर बॉलीवुड तक के सफर के बारे में...

खुद कही थी ये बात

अंगद बेदी ने एक इंटरव्यू में खुद कहा था कि मुझे लगता है कि काम ही सबसे ज्यादा जरूरी है। हर इंसान की एक ऐसी पर्सनालिटी बननी चाहिए कि लोग आपके काम से कनेक्ट कर सकें। मैं लाइफ में बेचारा बनकर नहीं रहना चाहता। अंगद ने बताया कि 17 साल की उम्र में उन्हें एहसास हुआ कि उन्हें अभिनेता बनना है, इसके बाद उन्होंने चचेरे भाई की डिफेंस कॉलोनी में एक दुकान में जाकर अभिताभ बच्चन की फिल्में देखना शुरू किया। इन्हीं फिल्मों को देखकर एक्टिंग के प्रति अंगद का रुझान और बढ़ गया।

पिता हो गए थे नाराज

एक इंटरव्यू के दौरान अंगद बेदी ने बताया कि उन्होंने बॉलीवुड में काम करने के लिए 18 साल की उम्र में बाल कटवा लिए थे, इस बात से उनके पिता इतने नाराज हो गए थे कि 20 साल तक उनसे बात ही नहीं की थी। इसके बाद अभिताभ बच्चन ने उन दोनों की सुलह करवाई थी।

ऐसे हुई नेहा से मुलाकात

अंगद बेदी ने साल 2018 में नेहा धूपिया से शादी कर ली थी। दोनों की शादी दिल्ली में हुई। खबरों की मानें तो अंगद से शादी से पहले ही नेहा प्रेग्नेंट हो गई थी। नेहा और अंगद ने अपने माता-पिता को शादी के बारे में बताने के बाद 72 घंटों में शादी कर ली थी। कपल के एक बेटा और एक बेटी है। अंगद से शादी के पांच महीने बाद ही नेहा धूपिया ने बेटी को जन्म दिया था। वही, साल 2021 में उन्होंने अपने बेटे गुरिफ सिंह धूपिया बेदी का स्वागत किया।

इन फिल्मों में नजर आए अंगद बेदी

अंगद बेदी को उनकी फिल्म डियर जिंदगी, टाइगर जिंदा है, घूमर, गुंजन सक्सेना, सूरमा जैसी फिल्मों के लिए जाना जाता है। अंगद बेदी ने बहुत सी फिल्मों में काम किया, हालांकि वे अभी तक किसी फिल्म में मुख्य किरदार के रूप में काम नहीं कर पाए हैं।



मुझे साउथ की फिल्में करने पर बहुत गर्व है

वर्ल्ड पिकलबॉल लीग में अभिनेत्री जेनेलिया देशमुख की टीम पुणे यूनाइटेड ने हाल ही में जीत दर्ज की है। अभिनेत्री ने न्यूज एजेंसी से बात की। अभिनेत्री ने फिल्मों में अपने सफर और भारत में खेलों के प्रति बढ़ते प्यार के साथ ही वेब सीरीज में काम को लेकर अपनी योजना शेयर की।

अभिनेत्री दक्षिण भारतीय फिल्मों के साथ ही हिंदी, मराठी समेत कई भाषाओं में फिल्में कर चुकी हैं। जब अभिनेत्री से पूछा गया कि क्या दर्शक उन्हें जल्द ही किसी ओटीटी सीरीज में देख पाएंगे उन्होंने कहा, मुझे ओटीटी में काम करना पसंद आया। शॉर्ट-फॉर्मेट हो या लॉन्ग-फॉर्मेट, मेरे लिए जो मायने रखता है, वह यह है कि मैं अपने दर्शकों तक कैसे कनेक्ट पहुंच पाती हूं। मेरा व्यक्तित्व ऐसा है कि मैं किसी भी तरह का काम करने के लिए तैयार रहती हूं। काम तो काम है। मैंने साउथ की फिल्में काफी पहले शुरू कर दी थीं। मुझे साउथ की फिल्में करने पर बहुत गर्व है। उन्होंने आगे कहा, मैंने बॉलीवुड और साउथ की फिल्मों की हैं। मैं फिल्मों को एक माध्यम के रूप में पसंद करती हूं, फिर वह लॉन्ग में हो या शॉर्ट फॉर्मेट में, लेकिन मैं इसे

लेकर उत्साहित हूं और लंबे समय से इंतजार कर रही हूं। भारत वैश्विक स्तर पर खेल को लेकर अपनी पहचान बना रहा है। गुकेश डोमराजू शतरंज में विश्व चैंपियन बने, भारत ने पेरिस ओलिंपिक और पैरालिंपिक दोनों में अच्छे प्रदर्शन किया। अभिनेत्री से पूछा गया कि क्या वह भारत में स्पोर्ट्स इकोसिस्टम के लिए बदलाव देखती हैं अभिनेत्री ने कहा, मुझे खेल पसंद है और हमेशा उम्मीद और प्रार्थना करती रही हू कि हमारे पास बेहतर खेल सुविधाएं, बुनियादी ढांचा और इसे देखने वाले अधिक लोग हों। यह एक या दो खेल तक ही सीमित था, मुझे लगता है कि आज लोग हर खेल और हर उस व्यक्ति को खुले तौर पर अपना रहे हैं, जो किसी न किसी चीज में अच्छे प्रदर्शन कर रहा है। मुझे लगता है कि यह मेरे जैसे दर्शक और मेरे बच्चों के लिए बहुत अच्छा है, जो खेल में रुचि रखते हैं। जेनेलिया ने कहा, मुझे लगता है कि आपके पास सपने देखने और कड़ी मेहनत करने का अवसर है। सपने देखना इसका एक हिस्सा है, लेकिन वहां जाकर विश्व स्तर पर अंतरराष्ट्रीय स्तर पर जगह बनाना कुछ ऐसा है, जो भारत पिछले कई सालों से बहुत सही तरीके से कर रहा है।



‘लाइगर’ में काम करने से पहले अनन्या पांडे को था यह संदेह, पिता चंकी पांडे ने साझा की वजह

जल्द ही चंकी पांडे फिल्म ‘हाउसफुल 5’ में नजर आएंगे। एक हालिया दिए इंटरव्यू में चंकी पांडे ने अपनी बेटी अनन्या के एक्टिंग करियर को लेकर भी बात की। इसी इंटरव्यू में चंकी पांडे ने बताया कि जब अनन्या को फिल्म ‘लाइगर’ ऑफर हुई थी तो वह डाउट में थी कि यह फिल्म करे या ना करे



अनन्या ने चंकी से बात की

चंकी पांडे हालिया इंटरव्यू में बताते हैं कि अनन्या फिल्म ‘लाइगर’ को करने से पहले उनके पास आई थी। उसने पूछा था कि पापा मैं इस फिल्म को करने के लिए काफी रंग हूं। वह जानना चाहती थी कि क्या इस फिल्म का करना चाहिए या नहीं तब चंकी ने जवाब दिया था कि बड़ी कमर्शियल फिल्म है, करनी चाहिए। अब चंकी को लगता है कि अनन्या सही थी।

फ्लॉप हुई थी लाइगर

फिल्म ‘लाइगर’ की बात की जाए तो यह बॉक्स ऑफिस पर फ्लॉप साबित हुई थी। अनन्या के साथ इस फिल्म में साउथ एक्टर विजय देवरकोंडा नजर आए थे। फिल्म की कहानी एक बॉक्सर की थी, जो स्टगल करके अपने सपनों को पूरा करता है।

अक्षय की फिल्म में अनन्या नजर आएंगी

इस साल अनन्या पांडे अक्षय कुमार और आर. माधवन की फिल्म ‘केसरी 2’ में नजर आएंगी। यह फिल्म आजादी से पहले की कहानी है। जल्द ही यह फिल्म रिलीज होगी। पिछले साल अनन्या फिल्म ‘कंट्रोव’ में दिखाई थी, यह फिल्म ओटीटी पर रिलीज हुई। यह फिल्म सोशल मीडिया, एआई के बुरे प्रभावों पर बात करती है।

क्या राजकुमार हिरानी की डेब्यू सीरीज की शूटिंग कर रहे हैं विक्रांत मैसी

कई लोकप्रिय फिल्मों के चुके राजकुमार हिरानी अब ओटीटी की दुनिया में दस्तक देने जा रहे हैं। उनकी डेब्यू ओटीटी सीरीज में विक्रांत मैसी नजर आएंगे। कुछ वक्त पहले विक्रांत ने कुछ वक्त ब्रेक लेने का एलान किया था। अब मीडिया रिपोर्ट्स में कहा जा रहा है कि विक्रांत मैसी ने सीरीज की शूटिंग शुरू कर दी है। वे गोवा में शूटिंग कर रहे हैं। क्या है इन खबरों की सच्चाई जानते हैं।

गोवा में चल रही शूटिंग

मीडिया रिपोर्ट्स में दावा किया जा रहा है कि विक्रांत गोवा में हैं और वे राजकुमार हिरानी की सीरीज की शूटिंग के शिलसिले में वहां हैं। ओटीटीप्ले की एक रिपोर्ट के मुताबिक विक्रांत मैसी गोवा पहुंच चुके हैं, जहां राजकुमार हिरानी की बहुप्रतीक्षित ओटीटी सीरीज आधिकारिक तौर पर शुरू हो गई है। सूत्रों ने पोर्टल को बताया कि अभिनेता ने गोवा के खूबसूरत तटीय इलाके में शूटिंग शुरू कर दी है। कहा जा रहा है कि सीरीज की शूटिंग जोंरों पर है। हालांकि, सीरीज के बारे में जानकारीयां गुप्त रखी गई हैं।



सलमान सर के साथ काम करना सपने को जीने जैसा है

सलमान खान की फिल्म सिकंदर में एक बॉलीवुड एक्ट्रेस की एंट्री हुई है। खुद एक्ट्रेस ने फिल्म में काम करने की खबर को कन्फर्म किया है। यह एक्ट्रेस कोई और नहीं बल्कि अंजिनी धवन हैं। 24 साल की अंजिनी ने पिछले साल ही फिल्म बित्री एंड फेमिली से बॉलीवुड में डेब्यू किया था। अब अंजिनी को इस फिल्म में एंट्री मिल गई है। अंजिनी ने कहा... मैं इससे ज्यादा आभारी नहीं हो सकती हूं। हर बार जब मैं फिल्म के सेट पर जाती हूं तो मुझे खुद को चुटकी काटते हुए पूछना पड़ता है कि क्या यह रियल लाइफ है या मैं सपना देख रही हूं। हर एक दिन एक चुटकी लेने वाला पल होता है। अंजिनी, सलमान की बड़ी फैन हैं और उनके साथ काम करने को लेकर वह बहुत एक्साइटेड हैं। उन्होंने आगे कहा... मैं उनकी सबसे बड़ी फैन बनकर बड़ी हुई हूं। उनके साथ काम करना वाकई सपने को जीने जैसा है।

रश्मिका मंदाना ने विजय देवरकोंडा का किया बचाव!

रश्मिका मंदाना ने हाल ही में सोशल मीडिया पर एक पोस्ट शेयर किया, जिसमें उन्होंने सभी से दयालु बनने की अपील की। एक्ट्रेस की इस पोस्ट से फैंस अंदाजा लगा रहे हैं कि उन्होंने यह पोस्ट अपने रूमर्ड बॉयफ्रेंड विजय देवरकोंडा के बचाव में की है। दरअसल, रश्मिका और विजय का एक वीडियो वायरल हुआ था, जिसमें उनकी मदद न करने के कारण एक्टर को ट्रोल किया गया था। अपने इंस्टाग्राम पर रश्मिका मंदाना ने बुधवार को दो तस्वीरें शेयर कीं। इनमें एक्ट्रेस ने एक सफेद रंग की टी-शर्ट पहनी है, जिस पर काइंडफुल लिखा हुआ है। इसके कैप्शन में उन्होंने लिखा, ‘आजकल दयालुता को कम समझा जाता है। मैं दयालुता और इससे जुड़ी हर चीज को अपनाती हूं। आइए हम सब एक-दूसरे के प्रति दयालु बनें।’

एक्ट्रेस की मदद ना करने पर हुए थे ट्रोल

विजय और रश्मिका का एक वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हुआ था, जिसमें वे दोनों कहीं से बाहर निकलते हुए दिखाई दे रहे थे। इस दौरान रश्मिका वॉकर के सहारे चल रही थीं, जबकि विजय बिना उनकी मदद किए सीधे आगे बढ़े और अपनी कार में जाकर बैठ गए। इसके बाद ही फैंस ने विजय को उनकी रूमर्ड गर्लफ्रेंड की मदद ना किए जाने पर ट्रोल कर दिया था।

इन फिल्मों में नजर आएंगी रश्मिका

रश्मिका मंदाना की आखिरी रिलीज हुई फिल्म 2024 की ब्लॉकबस्टर हिट पुष्पा 2 थी। जल्द ही एक्ट्रेस फिल्म सिकंदर और छावा में नजर आएंगी। ए. आर. मुरुगदोस के निर्देशन में बन रही फिल्म सिकंदर में रश्मिका, सलमान खान के साथ लीड रोल में दिखेंगी, जबकि छावा में वह विक्की कोशल के अपोजिट नजर आएंगी।



भूल गया कि फिल्म के डायरेक्टर बोमन ईरानी हैं

एक्टर से डायरेक्टर बने बोमन ईरानी की फिल्म ‘द मेहता बॉयज’ में अविनाश तिवारी ने बोमन ईरानी के बेटे की भूमिका निभाई है। हाल ही में बातचीत के दौरान अविनाश तिवारी ने बताया कि शूटिंग के दौरान वो भूल गए थे कि बोमन ईरानी फिल्म के डायरेक्टर हैं। फिल्म के प्रति उनके समर्पण को देखकर बाकी लोगों ने वैसा ही काम किया। इसलिए फिल्म अच्छी बनी है। यह फिल्म सिर्फ पिता-पुत्र की नहीं, बल्कि यह फिल्म इंसानी रिश्तों की कहानी है। पेश है अविनाश तिवारी से हुई बातचीत के कुछ और खास अंश..

फिल्म ‘द मेहता बॉयज’ में आपको क्या खास बात नजर आई

फिल्म का विषय तो हमेशा से काफी दिलचस्प रहा है। इंडियन सिनेमा का इतिहास रहा है कि फिल्मों में पिता-पुत्र के रिश्तों को खास तौर पर दिखाया जाता है। यह सिर्फ इंडियन सिनेमा में नहीं, बल्कि इंटरनेशनल सिनेमा में भी देखने को मिलता है। इस फिल्म में पिता-पुत्र के बीच जिस तरह के रिश्ते को दिखाया गया है। वह बात मुझे बहुत खास लगी थी। इस फिल्म को बहुत ही खास नजरिए से लिखा गया है। फिल्म की स्क्रिप्ट पढ़ते ही मुझे महसूस हुआ कि इस फिल्म का हिस्सा मुझे बनना है। मैंने जिंदगी में बहुत काम किया है और आगे करता रहूंगा। फिलहाल मेरे लिए यह महत्वपूर्ण फिल्म है।

इस फिल्म में आपने अमय का किरदार निभाया है। यह किरदार आपके निजी जीवन से कितना मेल खाता है

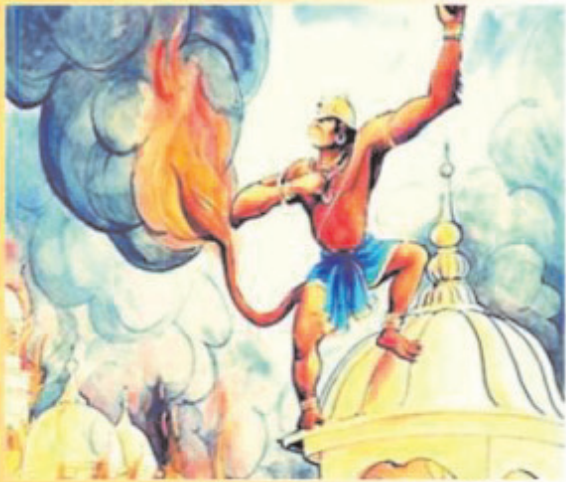
फिल्म के लिए यह किरदार बहुत महत्वपूर्ण है। इस फिल्म की कहानी मुझे सिर्फ पिता-पुत्र की नहीं लगती है। बल्कि यह फिल्म इंसानी रिश्तों की कहानी है। रिश्तों में कम्यूनिकेशन, ईगो और अपनी बात को सही तरीके से ना पहुंचा पाने की समस्या होती है। उसे इसमें बहुत बखूबी तरह से पिता-पुत्र के रिश्ते के माध्यम से कहा गया है। मुझे गर्व है कि मैं एक ऐसी फिल्म का हिस्सा हूँ, जो परिवार के बंधन और सुलह जैसे विषयों को इतने सटीक तरीके से रखती है।

डायरेक्टर के रूप में बोमन ईरानी के साथ काम करने का अनुभव कैसा रहा फिल्म के एक सीन की शूटिंग के दौरान मैं भूल गया कि बोमन सर फिल्म को डायरेक्ट कर रहे हैं। दरअसल, बोमन सर के साथ पहला सीन था जहां हम लोग एक दूसरे को सोने के लिए कहते हैं। इस सीन की रिवर्सल हमने डेढ़-दो महीने खूब की थी। शुरू के दो टेक तो हमने जो रिवर्सल की थी उसके हिसाब से बहुत अच्छा शूट हो गया। उसके बाद हम दोनों आपस में एक्टर के तौर पर डिरकस कर रहे थे कि सीन कैसा शूट करना है। जो फीडम इस फिल्म की शूटिंग के दौरान मिली, वैसी फीडम आज तक किसी फिल्म की शूटिंग के दौरान नहीं मिली। बोमन सर का इस फिल्म में जो समर्पण देखने को मिला है, उसे देखकर हर किसी को लगता था कि उस लेवल तक कैसे काम करना है। इसलिए यह अच्छी फिल्म बन पाई है।

जेबा- द एक्सीडेंटल... में महिलाओं की आजादी पर हुमा ने की बात

हुमा कुरैशी ने हाल ही में अपनी किताब लिखी है। इस किताब का नाम जेबा: द एक्सीडेंटल हीरो है। हुमा ने जयपुर लिटरेचर फेस्टिवल में हिस्सा लेने के दौरान अपनी पुस्तक पर चर्चा करते हुए कहा कि मैं महिलाओं को कैसे चलना चाहिए, कैसे कपड़े पहनना चाहिए, कैसे बर्ताव करना चाहिए जैसी बातों से परेशान हो गई हूँ। मैंने अपनी किताब में लिखा है कि महिलाओं को जिस दिन लिंग भेद से ऊपर उठकर देखा जाने लगेगा, उस दिन से महिलाओं को असली आजादी मिलेगी। लोगों को आदमी औरत से ज्यादा एक इंसान होकर सोचने की जरूरत है। वर्कफ्रेट पर हुमा जल्द ही वेब सीरीज दिल्ली काइम के तीसरे सीजन में दिखेंगी।





उत्तराखंड की वह जगह जहाँ लंका दहन के बाद हनुमान जी ने बुझाई थी अपनी पूँछ की आग

देवभूमि कहा जाने वाला उत्तराखंड राज्य अपनी प्राकृतिक सुंदरता, खूबसूरत नजारों व इतिहास को लेकर दुनियाभर में मशहूर है। उत्तराखंड में कई प्राचीन पहाड़, गंगा-यमुना सहित कई खूबसूरत जगहें हैं। माना जाता है कि इन चोटियों पर देवी-देवताओं के कई रहस्य और कहानियाँ छिपी हुई हैं। ऐसी ही एक रहस्यमय चोटी उत्तराखंड के उत्तरकाशी जिले में स्थित बंदरपूछ ग्लेशियर में भी है। आइए जानते हैं इसके बारे में-

रामायण काल है संबंध

बंदरपूछ का शाब्दिक अर्थ है - 'बंदर की पूँछ'। यह एक ग्लेशियर है जो उत्तराखंड के पश्चिमी गढ़वाल क्षेत्र में स्थित है। यह ग्लेशियर समुद्र तल से लगभग 6316 मीटर ऊपर स्थित है। इसका ग्लेशियर का संबंध रामायण काल से माना जाता है। पौराणिक कथाओं के अनुसार जब लंकापति रावण ने भगवान हनुमान की पूँछ पर आग लगाई थी तो उन्होंने पूरी लंका में आग लगा दी थी। इसके बाद हनुमान जी ने इस चोटी पर ही अपनी पूँछ की आग बुझाई थी। इसी कारण इसका नाम बंदरपूँछ रखा गया। यही नहीं, यमुना नदी का उद्गम स्थल यमुनोत्री हिमनद भी बंदरपूँछ चोटी का हिस्सा माना जाता है।

बंदर पूँछ में तीन चोटियाँ हैं - बंदरपूँछ 1, बंदरपूँछ 2 और काली चोटी भी स्थित है। यमुना नदी का उद्गम बंदरपूँछ सर्किल ग्लेशियर के पश्चिमी छोर पर है। बंदरपूँछ ग्लेशियर गंगोत्री हिमालय की रेंज में पड़ने वाला है। इस ग्लेशियर पर सबसे पहली चढ़ाई मेजन जनरल हेरोल्ड विलियम्स ने साल 1950 में की थी। इस टीम में महान पर्वतारोही तेनजिंग नोर्गे, साजेंट रॉय ग्रीनवुड, शेरपा किन चोक शेरिंग शामिल थे।

बंदरपूँछ ग्लेशियर जाने का सही समय

बंदरपूँछ ग्लेशियर जाने के लिए सबसे अच्छा समय मार्च से लेकर अक्टूबर का महीना माना गया है। वहीं, अगर आप यहां पर ट्रेकिंग का लुत्फ उठाना चाहते हैं तो मई और जून का महीना बेस्ट रहेगा।

उठा सकते हैं ट्रेकिंग का लुत्फ

सैलानी यहां पर ट्रेकिंग का लुत्फ भी उठाते हैं। इस दौरान आप ट्रेकिंग के रास्ते पर बसंत ऋतु के कई फूल देख सकते हैं। इसके अलावा आपको कई जानवरों की दुर्लभ प्रजातियाँ भी देखने को मिल सकती है। बता दें कि बंदरपूँछ ग्लेशियर जाने के लिए आपको देहरादून जाना पड़ेगा। वहां से आप उत्तरकाशी के लिए गाड़ी लेकर ग्लेशियर पहुंच सकते हैं।

भारत के मुस्लिम स्थापत्य में कर्नाटक राज्य में बेंगलुरु में टीपू सुल्तान उर्फ बेंगलुरु का किला अपना विशेष महत्व रखता है। एक समय में यह भव्य और ऐतिहासिक किला दक्खन के मजबूत किलों में शुमार था और पूरी भव्यता के साथ मौजूद था। विडम्बना ही कह सकते हैं कि इस किले के आज कुछ अवशेष ही शेष रह गए हैं। अवशेष भी किले की भव्यता को बताते हैं और सैलानियों को लुभाते हैं।

यह किला लगभग एक किमी लम्बाई में बना था जो दिल्ली गेट से वर्तमान केआईएमएस परिसर तक फैला हुआ था। सुरक्षा की दृष्टि से किला पानी की चौड़ी खाइयों से घिरा हुआ था। किले की प्राचीर में 26 बुजों की कमान थी जो चारों तरफ से महल की रक्षा करते थे। किला असामान्य अंडाकार आकार में था और किले को तोड़ने और कब्जा करने के प्रयास में लॉर्ड कॉर्नवालिस और उनकी सेना द्वारा की गई क्षति के दृश्य चित्रों के साथ मोटी दीवारों द्वारा संरक्षित किया गया है।

किले की विशिष्ट विशेषताओं में से एक तीन विशाल लोहे के घुड़ी वाला एक लंबा द्वार है। दीवारों पर कमल, मोर, हाथियों, पक्षियों और अन्य विस्तृत रूपांकनों की नक्काशी दर्शनीय है। मोटी लैटराइट दीवारें सभी को लुभाती हैं। टीपू के किले को पालक्काड फोर्ट भी कहा जाता है। किला कभी एक महत्वपूर्ण सैन्य छावनी हुआ करता था। आज यह किला भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण द्वारा संरक्षित है। यह स्थल पालक्काड आने वाले सभी पर्यटकों का एक पसंदीदा पिकनिक स्थल है।

समर पैलेस

अल्बर्ट विक्टर रोड और कृष्णा राजेंद्र के केंद्र में स्थित किले के मध्य बना 'समर पैलेस' इंडो-इस्लामिक वास्तुकला का सुंदर नमूना है। इसे मैसूर के सुल्तान हैदर अली ने बनवाना शुरू किया और टीपू सुल्तान ने उसको 1791 में पूरा करवाया। महल के भव्य मेहराब और कोष्क इस्लामी प्रभाव को दर्शाते हैं, जबकि स्तंभों के चारों ओर स्थित कोष्क प्रकृति में भारतीय हैं। दुर्गजिली इमारत की पहली मंजिल



लेह-लद्दाख अपनी प्राकृतिक सुंदरता और खूबसूरती के लिए देश ही नहीं दुनियाभर में प्रसिद्ध है। लद्दाख को भारत का मुकुट कहा जाता है। लद्दाख में बहुत से पर्यटक स्थल हैं। आज हम आपको लद्दाख में स्थित नुब्रा घाटी के बारे में बताने जा रहे हैं। नुब्रा घाटी लद्दाख की ऊँची और खूबसूरत पहाड़ियों के बीच बसी है। देश ही नहीं दुनियाभर से लोग इस घाटी में घूमने आते हैं। आइए जानते हैं नुब्रा घाटी के बारे में-

लद्दाख के बाग के नाम से मशहूर है नुब्रा घाटी

नुब्रा घाटी लेह से 150 किमी की दूरी पर बसी एक आकर्षक और खूबसूरत घाटी है। नुब्रा का मतलब होता है - फूलों की घाटी। यह घाटी गुलाबी और पीले जंगली गुलाबों से सजी है। इसकी सुंदरता की वजह से नुब्रा घाटी को 'लद्दाख के बाग' के नाम से भी जाना जाता है। इस घाटी का इतिहास सातवीं शताब्दी ई। पूर्व पुराना है। इतिहासकारों के मुताबिक इस घाटी में चीनी और मंगोलिया ने आक्रमण किया था। नुब्रा घाटी श्योक और नुब्रा नामक दो नदियों के बीच में बसी है। यहां आकर आप एक अलग तरह की संस्कृति का अनुभव करेंगे। इस घाटी की रेत और आकर्षक पहाड़ियाँ यहाँ आने वाले पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करती हैं। सर्दियों में नुब्रा घाटी का मौसम काफी ठंडा रहता है

जंगली गुलाबों से सजी है लद्दाख की यह घाटी खूब लुत्फ उठाते हैं देश-विदेश के पर्यटक

इसलिए सर्दियों में यहाँ जाना थोड़ा मुश्किल होता है। यहाँ जाने के लिए सबसे सही समय मई से सितंबर तक रहता है।

नुब्रा घाटी का सफर

अगर आप नुब्रा घाटी जाना चाहते हैं तो आपको सड़क मार्ग से होकर जाना होगा। नुब्रा घाटी पहुंचने के लिए सबसे पहले आपको राष्ट्रीय मार्ग से खर्दुंग ला तक का सफर करना होगा, यह दुनिया का सबसे ऊँचा दर्रा है। उसके बाद खर्दुंग गांव से होते हुए श्योक घाटी तक पहुँच सकते हैं। श्योक घाटी में बने घर और चारगाह पर्यटकों को खूब आकर्षित करते हैं। नुब्रा घाटी जाने से पहले यात्रियों को दो दिन के लिए लेह में रुकने की सलाह दी जाती है। एक बार जब यात्री यहां के वातावरण में ढल जाते हैं, तब नुब्रा घाटी के लिए आगे की यात्रा शुरू कर सकते हैं। नुब्रा घाटी तक की यात्रा में आपको ऐसी खूबसूरत सड़क मिलेगी जो आपका दिल जीत लेगी। नुब्रा घाटी के करीब पहुंचने पर रेत के टीलों के साथ सुनसान सड़क यहाँ आने वाले पर्यटकों का स्वागत करती हैं।

नुब्रा घाटी का व्यापारिक केंद्र 'डिस्कट'

डिस्कट को नुब्रा घाटी का व्यापारिक केंद्र कहा जाता है। यह गाँव बहुत ही सुंदर है। अगर आपको शांत वातावरण पसंद है तो आप डिस्कट से दस किलोमीटर दूर पश्चिम में हंडर की यात्रा कर सकते हैं। यहाँ के मैदानी इलाकों में आपको शांति और सुकून का अनुभव होगा। यहां आपको दो कूबड़ वाले ऊट देखने को मिल सकते हैं। डिस्कट और हंडर में रुकने के लिए बहुत सारे होटल, होम स्टे, रिसॉर्ट और टेंट उपलब्ध हैं।

नुब्रा घाटी कैसे पहुंचे

जहाँ पहले परिवहन की सुविधा ना होने के कारण लेह-लद्दाख जाना कठिन था, वहीं अब कुशोक बकुला रिम्पोछे एयरपोर्ट की वजह से दुनिया के किसी भी हिस्से से लेह जाना बेहद आसान हो गया है। आप दिल्ली से लेह के लिए फ्लाइट ले सकते हैं। इसके बाद आप मनाली और स्पीती के रास्ते निजी वाहन या बस से नुब्रा घाटी पहुँच सकते हैं।

टीपू सुल्तान का किला: अवशेष सुनाते हैं बुलंदियों की गाथा

पर चार कोनों पर स्थित 4 शाही कमरे, एक बड़ा हॉल, कक्ष और दो बालकनी हैं जहाँ से सुल्तान अधिकारियों को संबोधित करते थे और अपना राज दरबार आयोजित करते थे।

महल एक मजबूत पत्थर के चबूतरे पर बना है और इसमें उत्कृष्ट नक्काशीदार लकड़ी के खंभे हैं जो पत्थर के आधार पर टिके हुए हैं। यह पैलेस गहरे भूरे रंग में सागौन की लकड़ी से बना खूबसूरत रचना है। इस्लामी कला महल के आंतरिक भाग में 'आनंद का निवास' शिलालेखों के साथ सजा है। आंतरिक भाग में लोग टीपू सुल्तान से जुड़े इतिहास के बारे में जानकारी दी गई है। दीवारों पर पेंटिंग और भित्ति चित्र सुल्तान की बहादुरी और शख्सियतों की कहानियों का वर्णन करते हैं। प्रत्येक छोर पर महल के रंगीन अंदरूनी और दीवारों को देख सकते हैं। ये कभी रत्नों से आच्छादित थे जिन्हें बाद में हटा दिया गया। यहां सुल्तान द्वारा उपयोग किए जाने वाले हथियारों, रॉकेट तकनीक की पूर्णता और उनके कुछ अन्य उपकरणों की एक झलक देखने को मिलती है। उनके टाइगर सिंहासन के चित्र दीवारों पर सुशोभित हैं। भव्य महल का उपयोग राजा द्वारा गर्मियों में किया जाता था और इसे 'एबोड ऑफ हैपीनेस' और 'रैश ए जन्नत' अर्थात 'स्वर्ग की इर्ष्या' के रूप में जाना जाता है।

संग्रहालय

किले के एक हिस्से में संग्रहालय बना दिया गया है जिसमें पशु-पक्षियों के माडल, मुद्राएं, अस्त्र-शस्त्र, पोशाक, पुराने बर्तन आदि को प्रदर्शित किया गया है। वर्तमान में वर्तमान में दिल्ली गेट और दो गढ़ों के अवशेष और टीपू सुल्तान का समर पैलेस ही शेष रह गए हैं।

स्वर्णिम पृष्ठभूमि

ऐतिहासिक प्रमाणों के अनुसार किले को शुरुआत में 1537 ई. में विजयनगर साम्राज्य के प्रमुख और बेंगलुरु के संस्थापक केम्पे गौड़ा द्वारा मिट्टी के किले के रूप में बनाया गया था। गौड़ा का एक ऐसा शहर बनाने का सपना था जो हम्पी जैसा

सुंदर हो और एक किला, मंदिरों, तालाबों या जल जलाशयों और एक छावनी के साथ एक राजधानी शहर हो। इसलिए गौड़ा ने एक आकर्षक किला बनाया और इसे मिट्टी से मजबूत किया। मुगलों ने 1687 ई. में बेंगलुरु शहर पर कब्जा कर लिया और इसे 1689 ई. में मैसूर के तत्कालीन राजा चिक्का देवराज वोडेयार को पट्टे पर दे दिया, जिन्होंने मौजूदा किले का और विस्तार किया। लगभग 100 साल बाद महान योद्धा टीपू सुल्तान के पिता हैदर अली द्वारा 1781 ई. में किले को पुनर्निर्मित और मजबूत किया गया और टीपू सुल्तान द्वारा पूर्ण किया गया। वर्ष 1791 ई.लॉर्ड कॉर्नवालिस के नेतृत्व में ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी द्वारा किले पर हमला किया गया था, जिसमें लगभग 2,000 लोग मारे गए थे। खूनी लड़ाई के बाद, ब्रिटिश सेना ने महल पर कब्जा कर लिया। अंग्रेजों का किले पर कब्जा होने के बाद उन्होंने ने इसे तोड़ना शुरू कर दिया, यह प्रक्रिया 1930 के दशक तक जारी रही। प्राचीर और दीवारों को तोड़ कर सड़कों के लिए रास्ता बनाया, जबकि शस्त्रागार, बैरक और अन्य पुराने भवनों को तोड़ कर कॉलेजों, स्कूलों, बस स्टैंडों और अस्पतालों के लिए रास्ता बनाया। नवंबर 2012 में मेट्रो निर्माण स्थल पर श्रमिकों ने टीपू सुल्तान के समय की तोपों के साथ एक-एक टन वजन वाली 2 विशाल लोहे की तोपों का पता लगाया।

पर्यटक आते हैं यहां

महल के आस-पास के बगीचों में आराम कर सकते हैं। लोग यहां शांति और सुकून से टहलने और जॉगिंग करने आते हैं। किला देखने के लिए निर्धारित शुल्क लगता है तथा किले के इतिहास और घटनाओं को जानने के लिए गाइड सुविधाएं भी उपलब्ध हैं। यह पर्यटकों के लिए प्रतिदिन सुबह 8-30 से शाम 5-30 तक खुला रहता है। पर्यटक बड़ी संख्या में इसे देखने आते हैं। बेंगलुरु देश के सभी बड़े शहरों से हवाई एवं रेल सेवाओं से जुड़ा है। कर्नाटक राज्य के सभी स्थलों से बस सेवाएं उपलब्ध हैं।



पुणे में घूमने के लिए हैं कई बेहतरीन जगहें, आप भी जाएं जरूर

महाराष्ट्र का सांस्कृतिक केंद्र कहा जाने वाला पुणे एक बेहद ही खूबसूरत जगह है, जहां पर हर किसी को एक बार अवश्य जाना चाहिए। यहां पर आपको कई ऐतिहासिक स्मारक देखने को मिलेंगे तो इस क्षेत्र की आध्यात्मिक महत्ता भी कम नहीं है। अगर आप वीकेंड पर अपनी रोजमर्रा की जिन्दगी से एक ब्रेक चाहते हैं तो आपको पुणे घूमकर आना चाहिए। यकीन मानिए कि यह स्थान आपको कभी भी निराश नहीं करेगा। तो चलिए आज इस लेख में हम आपको पुणे में स्थित कुछ बेहतरीन प्लेसेस के बारे में बता रहे हैं-

दगडूशेट हलवाई गणपति मंदिर

यह मंदिर ना केवल पुणे बल्कि महाराष्ट्र में सबसे प्रसिद्ध मंदिरों में से एक है। मंदिर हिंदू भगवान गणेश को समर्पित है और इसका निर्माण दगडूशेट हलवाई द्वारा करवाया गया था। यह मंदिर इतना लोकप्रिय है कि देश के साथ-साथ दुनिया भर से लोग इसे देखने आते हैं। इस मंदिर में यूं तो हमेशा ही एक अलग चहल-पहल रहती है, लेकिन गणेश महोत्सव के समय यहां का नजारा बस देखते ही बनता है।

शनिवार वाडा

जब पुणे में घूमने की जगहों की बात होती है तो उसमें शनिवार वाडा का नाम सबसे पहले लिया जाता है। यह महल बाजीराव पेशवा प्रथम द्वारा बनाया गया था। महल में पांच द्वार, नौ बुर्ज, लकड़ी के खंबे और जाली का काम किया है। इस महल के साथ कई कहानियां जुड़ी हुई हैं,

जिसके कारण लोग इस जगह पर आते हैं और एक अद्भुत अनुभव प्राप्त करते हैं।

आगा खान पैलेस

अगर आप एक इतिहास प्रेमी हैं, तो आपको एक बार इस जगह पर अवश्य जाना चाहिए। 1892 में सुल्तान मोहम्मद शाह आगा खान III द्वारा निर्मित, यह महल भारतीय इतिहास की महत्वपूर्ण घटनाओं का गवाह है। आगा खान पैलेस अकाल से पीड़ित स्थानीय लोगों के बचाव करने से लेकर महात्मा



DIPR/C//2025

नीमकाथाना को जिला बनाने की मांग फिर मुखर, बार एसोसिएशन ने बढ़ाई पेन डाउन हड़ताल



जयपुर टाइम्स

नीमकाथाना(निस)। नीमकाथाना को जिला बनाने की मांग को लेकर आंदोलन जोर पकड़ चुका है। बार एसोसिएशन ने अपनी पेन डाउन हड़ताल को 15 फरवरी तक बढ़ा दिया है, वहीं युवा शक्ति संगठन ने प्रशासन को दो दिन का अल्टीमेटम दिया है। युवा शक्ति संगठन के कार्यकर्ताओं ने एडीएम और उपखंड कार्यालय के बाहर प्रदर्शन किया। संगठन के पदाधिकारी शीशपाल भाकर ने बताया कि 30 जनवरी को चक्का जाम के दौरान प्रशासन ने 7 दिन के भीतर मुख्यमंत्री से मुलाकात कराने का आश्वासन दिया था, लेकिन 10 दिन बीत जाने के बाद भी यह बैठक नहीं हुई। इससे लोगों में आक्रोश बढ़ रहा है। बार एसोसिएशन के अध्यक्ष सत्यनारायण यादव ने प्रेस कॉन्फ्रेंस में आंदोलन की अगली रणनीति बताते हुए कहा कि मौन जुलूस और मशाल जुलूस निकाला जाएगा। इसके अलावा, सैनिक कल्याण बोर्ड के अध्यक्ष प्रेम सिंह बाजोर से मिलकर आंदोलन को समर्थन देने की अपील की जाएगी। युवा शक्ति संगठन ने चेतावनी दी है कि अगर दो दिन के भीतर मुख्यमंत्री से मिलने का समय नहीं मिला तो आंदोलन को और उग्र किया जाएगा। साथ ही, जो जनप्रतिनिधि इस आंदोलन में सहयोग नहीं करेंगे, उनका विरोध किया जाएगा। प्रदर्शन में कामरेड गोपाल सैनी, महेंद्र मंडिया सहित जिला विकास मंच के कई पदाधिकारी शामिल रहे।

सप्ताह में दो दिन चलेगी भावनगर-हरिद्वार साप्ताहिक सुपरफास्ट ट्रेन

जयपुर टाइम्स

सुजानगढ़(नि.सं.)। सुजानगढ़ जोधपुर के रास्ते भावनगर से हरिद्वार के मध्य चलने वाली ट्रेन नं 19271- 19272 साप्ताहिक सुपरफास्ट के फेरे में बढ़ोतरी की गई है। अब यह ट्रेन 11 फरवरी से ट्रेन सप्ताह में दो दिन चलेगी। सामाजिक कार्यकर्ता नागेश कुमार कौशिक ने बताया कि इससे सुजानगढ़ डेगाना रूट के स्टेशनों से हरिद्वार जाने के लिए सीधी रेल सेवा मंगलवार के साथ साथ गुरुवार को भी उपलब्ध होगी।

कैरियर निर्माण के बारे में दी जानकारी

जयपुर टाइम्स

सुजानगढ़(नि.सं.)। निकटवर्ती गांव चरला में राज्य सरकार के निर्देशानुसार राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय में कैरियर डे विषयक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में मुख्य वार्ताकार डीएसपी दरजाराम बोस, सहायक वन संरक्षक क्रांति सिंह भींचर, दीप सिंह भाटी, सरपंच प्रतिनिधि मनसुख गोदारा ने विचार प्रकट किए। अध्यक्षता प्रधानाचार्य अमरसिंह ने की। कार्यक्रम में वक्ताओं ने कैरियर निर्माण के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी दी।

सड़क पर फैल रहा सीवरेज का गंदा पानी, आमजन हो रहे परेशान



जयपुर टाइम्स

लक्ष्मणगढ़(निस)। शहर के सेटों के बाजार में मुरली मनोहर मंदिर से चोपड़ा की तरफ जाने वाले मार्ग पर सीवरेज चैम्बर विगत करीब तीन दिनों से भरा पड़ा है और चेंबर की गंदगी बाहर सड़क पर आ रही है और गंदी बदबू और गंदे पानी की वजह से आस-पड़ोस के व्यापारियों व आम राहगीरों को ख़ासी परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। वहीं द संबन्धित अधिकारियों व प्रशाशन की नौद खुलने का नाम नहीं ले रही जिसके चलते स्थिति और भी विकट हो रही है। स्थानीय व्यवसाई सुरेश बीबीपुरिया ने बताया कि सीवरेज के गंदे पानी की उक्त समस्या करीब दो - तीन दिनों से हो रही है। उन्होंने बताया कि उक्त समस्या के बारे में प्रशासन को अवगत कराया जा चुका है किंतु वे कोई ध्यान नहीं दे रहे है। उन्होंने बताया कि सीवरेज के गंदे पानी से बाजार में बदबू फैल रही है और बीमारियों का खतरा बना हुआ है वहीं सीवरेज की गंदगी से बाजार के व्यापारी बहुत परेशान हो रहे है।

अनुजा निगम की विभिन्न योजनाओ में ऋण के लिए साक्षात्कार कल

जयपुर टाइम्स

झुंझुनूं(निस)। राष्ट्रीय अनुसूचित जाति वित्त व विकास निगम, राष्ट्रीय वित्त वर्ष 2024-25 के ऋण के लिए 12 फरवरी को सुबह 10 बजे से जिला परिषद (ग्रामीण विकास प्रकोष्ठ) में साक्षात्कार आयोजित किया जाएगा। अनुजा निगम के परियोजना प्रबंधक अरविन्द कुमार ओला ने बताया कि अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, स्वच्छकार , सफाई कर्मचारी, दिव्यांग श्रेणी व अन्य पिछड़ा वर्ग के व्यक्तियों के लिए स्वरोजगार के लिए ऑन लाईन ऋण आवेदन आमंत्रित किए गए थे। जिनका ऋण साक्षात्कार आयोजित होगा। आवेदक अपना आवेदन पत्र व साथ में मूल दस्तावेज यथा जन आधार कार्ड, आधार कार्ड, राशन कार्ड, जति प्रमाण पत्र, आय प्रमाण पत्र, बैंक खाते की पास बुक, दिव्यांग प्रमाण पत्र आदि दस्तावेज आवश्यक रूप से साथ लेकर आए।

कंप्यूटर लैब का उदघाटन: कैरियर मेले का आयोजन

जयपुर टाइम्स

मंडावा(निस)। सरदार हरलाल सिंह राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, हनुमानपुरा में सोमवार को कंप्यूटर लैब का उद्घाटन व कैरियर मेले का आयोजन किया किया। इस अवसर पर मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी अनुसुइया ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि भामाशाह की ओर से विद्यालय में भेंट किए गए कंप्यूटरों से विद्यालय में पढ़ने वाले विद्यार्थियों का विकास होगा। उन्होंने कहा कि सरकारी विद्यालयों में मूलभूत सुविधाओं को पूरा करने में भामाशाह की ओर से जो सहयोग दिया जा रहा है वह सराहनीय हैजिला शिक्षा अधिकारी मनोज ढ़ाका ने समारोह को संबोधित करते हुए कहा कि वर्तमान समय में कंप्यूटर का ज्ञान सभी छात्र-छात्राओं के लिए अति आवश्यक है। इस आधुनिक युग में कंप्यूटर के बिना हम जीवन की कल्पना भी नहीं कर सकते हैं इसलिए प्रत्येक विद्यार्थी कंप्यूटर के ज्ञान को ग्रहण करें। इस मौके पर एपीसी समसा कमलेश तेतरवाल ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि कंप्यूटर लैब की सुविधा उपलब्ध कराकर भामाशाह की ओर से सभी छात्र-छात्राओं के लिए प्रगतिशील कार्य किया है। जिससे सभी छात्र-छात्राओं के ज्ञान में वृद्धि होगी। तेतरवाल ने कहा कि वे सीएसआर फंड के तहत



जल्द ही स्मार्ट क्लास बच्चों के लिए बनाकर देंगे। सामाजिक कार्यकर्ता राजन चौधरी ने कहा कि उनके पिता फूल सिंह दूलड़ दादाजी के दिमाग में यह विचार आया कि वर्तमान का दौर डिजीटल दौर है। इस युग में कंप्यूटर ज्ञान की बहुत महती आवश्यकता है तो उनके पिता ने अपने भाईयों की स्मृति में विद्यालय परिवार को छकंप्यूटर भेंट किए है। चौधरी ने कहा उनके परिवार की ओर से पूर्व में भी विद्यालय के सर्वांगीण विकास में सहयोग किया गया है व आगे भी बच्चों की शिक्षा में नवाचार के लिए जिस प्रकार की भी मदद की आवश्यकता होगी तो उनका परिवार सहायता के लिए सदैव तत्पर रहेगें। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए

डॉ.आरके सुमन ने कहा कि आज आधुनिक शिक्षा का युग है जिसमें कंप्यूटर की महती आवश्यकता है। इस मौके पर सरपंच प्रतिनिधि सुभाष सेवदा ने भी भामाशाह परिवार का आभार प्रकट करते हुए विद्यार्थियों को मन लगाकर पढ़ाई करने के लिए प्रेरित किया। इस मौके पर प्रधानाचार्य जवाहर लाल काला की ओर से सभी अतिथियों को स्वागत किया गया व विद्यालय में किए जा रहे नवाचारों के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी दी। इस अवसर पर नरेश खादीवाला, ओमप्रकाश दूलड़,मास्टर महावीर दूलड़, पूर्व डेयरी चेयरमैन महिपाल दूलड़ सहित अनेक ग़ामवासी, स्कूली विद्यार्थी व अध्यापक उपस्थित रहें।

बंदरों के आंतक से लोग परेशान, समस्या के समाधान की मांग

जयपुर टाइम्स

सरदारशहर(निस)। शहर के वार्ड 4 में बंदरों के आंतक से परेशान मोहल्ले के लोगों ने सोमवार को वार्ड पार्षद अमरचंद मीणा और व्यापार एवं उद्योग संघ मंत्री अशोक हरचंदानी के नेतृत्व में एसडीएम को ज्ञापन सौंपकर समस्या का समाधान करने की मांग की। ज्ञापन में बताया कि वार्ड 4 में बंदरों की संख्या लगातार बढ़ रही है। जिस कारण मोहल्ले के लोगों को भारी परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। बंदर न केवल लोगों को डराते हैं बल्कि घरों में घुसकर सामान को नुकसान पहुंचाते हैं और छोटे बच्चों व बुजुर्गों को घायल करने की घटनाएं भी हो रही है। बंदरों के झुंड आते हैं जो अक्सर अक्रामक हो जाते हैं। मोहल्ले के लोगों में डर और असुरक्षा का माहौल बन गया है। लोग अब अपने घरों से बाहर निकलने में भी भय महसूस करते हैं। बच्चों का बाहर खेलना मुश्किल हो गया है। फल और सब्जियां



और अन्य सामान को नुकसान पहुंचाते हैं। ज्ञापन के माध्यम से उन्होंने बताया कि इस समस्या का शीघ्र समाधान किया जाए। बंदरों को सुरक्षित तरीके से पकड़ने और उन्हें जंगल या अन्य सुरक्षित स्थानों पर छोड़ने की व्यवस्था की जाए। ज्ञापन देने वालों में वार्ड के राम लाल हरचंदानी, अशोक हरचंदानी, संजय हरचंदानी, अनूप हरचंदानी, बजरंग लाल सेवदा, अतुल सेवदा, हरीश कुमार, नरेंद्र कुमार, पार्षद अमरचंद मीणा आदि उपस्थित रहे।

पूर्व केंद्रीय मंत्री राजेश पायलट थे किसानों के मसीहा: महनसरिया



जयपुर टाइम्स

चूरू(निस)। पूर्व केंद्रीय मंत्री राजेश पायलट की जयंती पर चूरू जिला मुख्यालय नई सड़क पर आयोजित श्रद्धांजलि सभा में चूरू नगर परिषद के पूर्व सभापति गोविंद महनसरिया ने पुष्पांजलि अर्पित करते हुए कहा कि राजेश पायलट किसानों के मसीहा थे उन्होंने किसानों की मसीहा बनकर सेवा की थी। इसलिए आज पूरा देश उनको श्रद्धा पूर्वक याद कर रहा है। महनसरिया ने कहा कि इसी प्रकार उनके सुपुत्र पूर्व उप मुख्यमंत्री सचिन पायलट भी आमजन की आवाज बने हुए हैं। जनता उनको आशा भरी नजरों से राजस्थान का मुख्यमंत्री देखना चाहती है। इस अवसर पर चूरू शहर

ब्लॉक कांग्रेस अध्यक्ष असलम खोकर, पार्षद अली मोहम्मद भाटी, समीउल्लाह गोरी, मोहन ट्रेलर, ताराचंद बाटिया, लालचंद सैनी, पार्षद विजय जालान, युसूफ लुहार, शेरखान मलकान, मुशी खा, अमीन खान रिटाईड स्टेशन मास्टर, सदीक लीलघर, कीसनाराम बाबल, फूलचंद किरोड़ीवाल, विद्याधर मेघवाल, सज्जन सिंह, यूनस खान, ईदुखा फतेहखानी, अयूब खान, असलम खान, खेताराम गढ़वाल, मोहम्मद लियाकत कुरेशी, मोहम्मद अनवर, मुबारक खान रतन नगर, मानक जाखड़, ओमप्रकाश गेट, इदरीश खान, मोहर सिंह पूनिया सहित सभी उपस्थित लोगों ने राजेश पायलट के चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित करके अपने प्रिय नेता को याद किया।

पेड़ लगाकर दिया पर्यावरण संरक्षण का संदेश

जयपुर टाइम्स

मण्डावा(निस)। आदर्श विद्या मंदिर मंडावा में कक्षा 12 सीबीएसई के विद्यार्थियों ने अपनी फेयरवेल को यादगार बनाने के लिए वृक्षारोपण का अनूठा आयोजन किया। छात्रों ने विद्यालय परिसर में अशोक और शहतूत के पेड़ लगाए, जो हरियाली बढ़ाने और पर्यावरण संरक्षण के प्रतीक हैं। विद्यालय के निदेशक अभिषेक तेतरवाल ने इस पहल की सराहना करते हुए कहा कि विद्यार्थियों ने फेयरवेल को सिर्फ विदाई तक सीमित न रखकर, एक सार्थक संदेश दिया है। अशोक और शहतूत के पेड़ वर्षों तक इनकी यादों को जीवंत रखेंगे और पर्यावरण को लाभ पहुंचाएंगे। प्रधानाचार्य मुकेश कुमार स्वामी ने कहा कि यह पहल विद्यालय और पर्यावरण के प्रति विद्यार्थियों की गहरी संवेदनशीलता को दर्शाती है। ये वृक्ष आने वाले वर्षों में छाया और फल प्रदान करेंगे, ठीक वैसे ही जैसे शिक्षा जीवन को संवारीती है। इस अवसर पर विद्यार्थियों ने



संकल्प लिया कि वे न केवल इन पौधों की देखभाल करेंगे, बल्कि अपने जीवन में भी अधिक से अधिक वृक्ष लगाने के लिए दूसरों को प्रेरित करेंगे। शिक्षकों और विद्यालय परिवार ने इस प्रयास की भूरी-भूरी प्रशंसा की और इसे एक नई परंपरा के रूप में आगे बढ़ाने की इच्छा जताई। फेयरवेल का यह हरित संदेश आने वाली पीढ़ियों को भी पर्यावरण के प्रति जागरूक बनाएगा और विद्यालय की मिट्टी से विद्यार्थियों का यह जुड़ाव हमेशा बना रहेगा।

मण्डावा पालिका की बजट बैठक कल

जयपुर टाइम्स

मण्डावा(निस)। नगर पालिका मण्डल मण्डावा की साधारण सभा की बैठक बुधवार को सुबह सवा 11 बजे चेयरमैन नरेश सोनी की अध्यक्षता में झुंझुनूं मार्ग स्थित डॉ0 अम्बेडकर - भवन के सभागार में आहुत की गई है। बैठक में नगर पालिका मण्डावा के बजट अनुमान 2025 -26 व संशोधित बजट अनुमान 2024 -25 के अनुमोदन सहित विभिन्न मुद्दों पर विचार विमर्श किया जाएगा। यह जानकारी नपा में नेता प्रतिपक्ष मोहम्मद इब्राहिम ने दी।

मंदिर जाकर लौट रहे बुजुर्ग को गाड़ी ने टक्कर मारी

जयपुर टाइम्स

भीलवाड़ा(नि.सं.) माताजी के मंदिर का सड़क किनारे खड़े बुजुर्ग को अज्ञात वाहन ने टक्कर मार दी। हादसे में गंभीर घायल हुए बुजुर्ग ने इलाज के दौरान हॉस्पिटल में दम तोड़ दिया। पुलिस ने शव का पोस्टमॉर्टम करवाकर परिजनों के सुपुर्द कर जांच शुरू की। मामला बिजौलिया धाना क्षेत्र का है। धाने के हेड कॉन्स्टेबल राम सिंह ने बताया कि गोपालपुरा धाना डाबी निवासी जगन्नाथ गुर्जर(50) पिता कालू गुर्जर रविवार को अकेले ही धाना क्षेत्र के नया गांव स्थित नला के माताजी मंदिर दर्शन करने गए थे। शाम करीब 4 बजे वो दर्शन करने के बाद सड़क किनारे खड़े होकर घर जाने के लिए किसी गाड़ी का इंतजार कर रहे थे। इसी दौरान अज्ञात वाहन ने उन्हें अपनी चपेट में ले लिया। हादसे में जगन्नाथ गंभीर रूप से घायल हो गया। यहां से गुजर रहे राहगीरों ने इलाज के लिए बिजौलिया अस्पताल पहुंचाया, जहां उसकी हालत ज्यादा गंभीर होने पर उसे भीलवाड़ा के महात्मा गांधी हॉस्पिटल के लिए रेफर कर दिया गया। यहां इलाज के दौरान उसकी मौत हो गई। शव को मॉर्चयुरी में सुरक्षित रखवाया और परिजनों को सूचना दी गई। सोमवार को परिजनों के आने के बाद शव का पोस्टमॉर्टम करवाकर उसे परिजनों को सौंपा गया। पुलिस ने परिजनों की रिपोर्ट के आधार पर अज्ञात वाहन चालक के खिलाफ मामला दर्ज कर जांच शुरू कर की।

3 साल से फरार टॉप-10 अपराधी गिरफ्तार

झालावाड़(नि.सं.) झालावाड़ पुलिस ने एक बड़ी सफलता हासिल करते हुए तीन साल से फरार चल रहे एक खतरनाक अपराधी को गिरफ्तार किया है। मिश्रीली धाने के टॉप-10 अपराधियों की सूची में शामिल रणजीत सिंह (35) को पुलिस ने धर दबोचा। धानाधिकारी सुरेंद्र सिंह के नेतृत्व में की गई इस कार्यवाई में पता चला कि आरोपी के खिलाफ कोटा जिले के विभिन्न धानों में डकैती की साजिश, चोरी और मारपीट समेत कई गंभीर मामले दर्ज हैं। रणजीत सिंह, जो किशन सिंह सोध्या राजपूत का पुत्र है, मूल रूप से कोटा ग्रामीण के सुकेत धाना क्षेत्र के

राज्य स्तरीय निबंध प्रतियोगिता

चुनावों में राजनीतिक दलों की ओर से मुफ्त सुविधाओं का प्रलोभन लोकतंत्र के लिए खतरा



जयपुर टाइम्स

लक्ष्मणगढ़(निस)। भगवानदास तोदी पी.जी. महाविद्यालय लक्ष्मणगढ़ में राज्य स्तरीय निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। महाविद्यालय प्राचार्य डॉ एन.एस. नाथावत ने बताया कि कमला देवी भगवानदास तोदी स्मृति राज्य स्तरीय निबंध प्रतियोगिता का विषय " चुनावों में राजनीतिक दलों की ओर से मुफ्त सुविधाओं का प्रलोभन लोकतंत्र के लिए खतरा" था। प्रतियोगिता में सौकर, चूरू, रतनगढ़ , लाडनूं, नवलगढ़ व लक्ष्मणगढ़ के विभिन्न 22 महाविद्यालयों के 92 प्रतिभागियों ने भाग लिया। प्रतियोगिता में प्रथम, द्वितीय और तृतीय स्थान पर रहने वाले प्रतिभागियों को नगद पुरस्कार के रूप में क्रमशः 11000,7100 व 5100 रूपए से महाविद्यालय वार्षिकोत्सव पर पुरस्कृत किया जाएगा। निबंध प्रतियोगिता का आयोजन संयोजक महेश कुमार अग्रवाल व सहसंयोजक मनीष देव मील के निर्देशन में हुआ।

विप्र फाउंडेशन चूरू के पदाधिकारियों ने किया परशुराम ज्ञान पीठ का भ्रमण



जयपुर टाइम्स

सरदारशहर(निस)। विप्र फाउंडेशन की ओर से निर्मित श्री परशुराम ज्ञानपीठ जयपुर के बढ़ते स्वरूप का अवलोकन जयपुर प्रवास के दौरान राष्ट्रीय महामन्त्री पवन पारीक के नेतृत्व में किया गया। इस अवसर पर राष्ट्रीय महामंत्री पवन पारीक ने बताया कि विप्र फाउंडेशन की ओर से अप्रैल माह के अन्त तक परशुराम ज्ञान पीठ समाज को सुपुर्द कर दिया जाएगा। जिसका उद्घाटन राष्ट्रपति द्रोपती मुर्मू की ओर से किया जाएगा। जयपुर प्रवास के दौरान विप्र फाउंडेशन की ओर से निर्मित बहुउद्देशीय सात मंजिला श्री परशुराम ज्ञानपीठ जयपुर के बढ़ते स्वरूप का अवलोकन राष्ट्रीय महामन्त्री पवन पारीक के नेतृत्व में विप्र फाउंडेशन चूरू जिले की टीम राष्ट्रीय सचिव मुकेश रामपुरा, युवा प्रकोष्ठ प्रदेश अध्यक्ष सुनील मिश्रा, युवा जिला अध्यक्ष दीपक शर्मा, सामाजिक कार्यकर्ता लोकेश पारीक, जिला सचिव रामविलाश शर्मा ने राष्ट्रीय महामंत्री पवन पारीक का साफा पहनवाकर स्वागत किया गया।अप्रैल में होने वाले श्री ज्ञानपीठ के उद्घाटन के बारे में विचार विमर्श किया। पारीक ने बताया कि यह ज्ञानपीठ समाज के लिए मिल का पत्थर साबित होगा। समाज के प्रत्येक व्यक्तित्व को तन, मन व धन से इसमें सहयोग करना चाहिए। उपरोक्त जानकारी विप्र फाउंडेशन के प्रदेश मीडिया प्रभारी पवन चौटिया ने दी।

स्व. राजेश पायलट की 80 वी जयंती पर कांग्रेसी कार्यकर्ताओं ने की पुष्पांजलि



जयपुर टाइम्स

जयपुर हरमाड़ा(निससं.) सौकर रोड स्थित राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय हरमाड़ा में कांग्रेसी कार्यकर्ताओं ने पूर्व केंद्रीय मंत्री किसान नेता स्व. राजेश पायलट की 80वीं जयंती पर उनकी मूर्ती पर पुष्पांजलि अर्पित कर श्रद्धांजलि दी एवं विचार संगोष्ठी का आयोजन हुआ इस दौरान उप जिलाप्रमुख डागर ने उनकी जीवनी पर प्रकाश डाला। इस अवसर उप जिलाप्रमुख मोहन डागर, वरिष्ठ नेता बाबूलाल गोवल्या ,डीसीसी सचिव मुकेश गुर्जर खेरवाडी, पूर्व पीसीसी सचिव महेन्द्र सिंह खेड़ी, पूर्व प्रधान मदन रावत, रामकरण चंदीजा, श्रवण गोवल्या,वंसी गोवल्या, एडवोकेट मोहन गोवल्या, अशोक गुर्जर राकेश दरीया, विशाल शर्मा उपस्थित थे।

3 साल से फरार टॉप-10 अपराधी गिरफ्तार

अंतरालिया का रहने वाला है और वर्तमान में चंद्रपुर, मिश्रीली में रह रहा था। पुलिस के अनुसार, आरोपी मोड़क, सुकेत, भवानीमंडी और मिश्रीली धाना क्षेत्रों में आपराधिक गतिविधियों में सलिस था। गिरफ्तारी अभियान में हेड कॉन्स्टेबल अशोक कुमार, हनुमान, हंसराज और मुकेश की टीम शामिल रही। आरोपी को गिरफ्तारी के बाद न्यायालय में पेश किया गया, जहां से उसे जेल भेज दिया गया है। यह गिरफ्तारी पुलिस द्वारा चलाए जा रहे विशेष अभियान का हिस्सा है, जिसके तहत वांछित अपराधियों को पकड़ने का अभियान चलाया जा रहा है।

विस प्रत्याशी जागिड़ ने किया विकास कार्यों का निरीक्षण

जयपुर टाइम्स

तारानगर(निस)। तारानगर विधानसभा प्रत्याशी व भाजपा नेता राकेश जागिड़ ने नगरपालिका अधिशाषी अधिकारी अजय प्रतापसिंह के साथ नगरपालिका की ओर से शहर में हो रहे विकास कार्यों का निरीक्षण किया। जागिड़ ने ठेकेदार से कहा कि उच्च गुणवत्ता के साथ कार्य हो, निम्न गुणवत्ता के साथ कोई समझौता नहीं किया जाएगा। जागिड़ ने कहा कि मुख्यमंत्री भजनलाल की सरकार में पूर्व नेता प्रतिपक्ष राजेंद्र राठौड़ के निर्देशन में प्रदेश विकास के पथ पर अग्रसर है। इस मौके पर उनके साथ जमरदीन तेली, मोहम्मद तैयब, अनूप खण्डेवाल, गुलाब सोलंकी, पंकज जागिड़, मोहम्मद आरिफ आदि मौजूद रहे।

कैरियर मेले में विद्यार्थियों ने सीखा व्यापार का कौशल



जयपुर टाइम्स

राजलदेसर(निस)। प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना के अन्तर्गत बच्चों को व्यापार करने के तरीके सिखाने के उद्देश्य से राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय में कैरियर मेले का आयोजन हुआ। जिसमें 22 स्कूली विद्यार्थियों से अधिक बच्चों ने अपनी दुकानें लगाईं और व्यापार करने का कौशल सीखा। मनमोहन दान चारण ने बच्चों को भविष्य निर्माण के अलग अलग क्षेत्र में आगे बढ़ने के लिए बताया। विद्यार्थियों में कैरियर डे पर लगे मेले को लेकर काफी उत्साह देखा गया। इस अवसर पर विद्यालय विद्यार्थियों के अभिभावक करबे के प्रमुख नागरिक व भामाशाह उपस्थित रहे। शाला प्रधान बालचन्द्र शर्मा ने पधारे अभिभावकों और व्यक्तियों का स्वागत किया।

विद्यार्थियों को कैरियर डे के बारे में किया प्रेरित



जयपुर टाइम्स

राजलदेसर(निस)। राजस्थान क्षेत्रिय ग्रामीण बैंक की ओर से पीएमश्री युनियन क्लब राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय में लगे कैरियर मेला 2025 के अवसर पर शाखा प्रबंधक तरुण कुमार कटारिया ने विद्यार्थियों को कैरियर डे के बारे में मोटिवेशन प्रदान किया। बड़ोदा राजस्थान क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक की ओर से आयोजित बीआरकेजीबी लक्ष्य 2024 प्रतियोगिता में स्कूल की छात्रा केलाश राजपुराहित ने क्षेत्रीय कार्यालय स्तर पर प्रथम स्थान प्राप्त किया गया और हेड ऑफिस स्तर पर कालीफाई किया गया। जिसके लिए शाखा प्रबंधक तरुण कुमार कटारिया की ओर से छात्रा को ट्रॉफी व प्रशस्ति पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया। बैंक की विभिन्न योजनाओं की जानकारी भी प्रदान की गई। शाखा के हेड कैशियर हरिशंकर माली ने साइबर फ्रॉड के बारे में जानकारी प्रदान की। ग्राम जेगणिया वीदावतान में राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय में भी बीआरकेजी बैंक राजलदेसर के शाखा प्रबंधक तरुण कुमार कटारिया ने बैंक के बारे में जानकारी प्रदान की। प्रधानमंत्री जीवन ज्योति योजना, प्रधानमंत्री सुरक्षा बीमा योजना, के बारे में जानकारी और साइबर अपराध के बारे में जानकारी प्रदान की। इस अवसर पर विद्यालय छात्र छात्राओं सहित स्टाफ मौजूद रहा।

नशा मुक्ति जागरूकता कार्यक्रम

नशा व मादक पदार्थ हमारे जीवन में एक बहुत बड़ी कुरीति



जयपुर टाइम्स

तारानगर(निस)। नेहरू युवा केंद्र चूरू माय भारत खेल व युवा मंत्रालय भारत सरकार की ओर से तारानगर के टैगोर संस्थान में उप निदेशक मंगलाराम जाखड़ के निर्देशन में एक दिवसीय नशा मुक्ति जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन हुआ। सामाजिक कार्यकर्ता राकेश टाक ने युवाओं को संबोधित करते हुए कहा कि नशा व मादक पदार्थ हमारे जीवन में एक बहुत बड़ी कुरीति है, इसको छोड़ने के लिए प्रत्येक युवा को स्वयं से संकल्प लेकर जागरूकता लानी होगी। टैगोर संस्थान के निदेशक बलवीर सहारण ने मादक पदार्थों की रोकेथाम के लिए प्रेरित किया। जिला युवा सलाहकार समिति सदस्य नेमीचंद जागिड़ ने नशा मुक्ति के लिए युवाओं को शपथ दिलाई।

विद्यालय में भेंट किए स्पीकर सैट

सुजानगढ़(नि.सं.)। शहर के नया बास स्थित राजकीय गणेशीराम झंवर उच्च माध्यमिक विद्यालय में अध्यापक पवन कुमार शर्मा ने करीब बीस हजार की लागत के दो आहुजा स्पीकर सैट प्रदान किए। व्याख्याता बलदेव सिंह ढाका की प्रेरणा से ये स्पीकर सैट प्रदान किए गए। इस दौरान प्रधानाचार्या कुसुम शर्मा, चैनप्रकाश प्रजापत, हरीप्रसाद टेलर, विकास प्रजापत, ओमप्रकाश, सीताराम मीणा, आशुराम खटौक सहित अनेक लोग मौजूद रहे।

सांवरे की महफिल को सांवरा सजाता है, किस्मत वालों के घर श्याम आता है

मन की बातां सांवरिया कार्यक्रम में भजन संध्या, झूमे श्रोता

जयपुर टाइम्स

चूरू(निस)। स्थानीय श्री राम मंदिर में श्री श्याम एकादशी भक्त मंडल की ओर से आयोजित मन की बातां सांवरिया कार्यक्रम के अंतर्गत रविवार देर शाम बाबा श्याम की भव्य भजन संध्या आयोजित की गई। कार्यक्रम का शुभारंभ बाबा श्याम की अखंड ज्योत प्रज्वलित कर किया गया। कार्यक्रम का आगाज चूरू के राकेश दाधीच ने गणेश वंदना से किया। कार्यक्रम में आशीष शर्मा आशु व अनुज गोंयल ने भक्तों की नैया को भी कर दो किनारा, तेरे सिवा दुनिया में कोई ना हमारा....., दो दिन के बदले में तीस दिन तक मौज करू, अपने ठाकुर की सेवा भजनों से मैं रोज करू.....। वहीं मुरादाबाद की शिल्पी कौशिक ने सांवरे की महफिल को मेरा सांवरा सजाता है, किस्मत वालों के घर में श्याम आता है, तू खादू बुलाता रहे मैं आता रहूँ, हम देख तेरा सिंगार दीवाने हो गए, मेरा हाथ पकड़ कर देख बाबा मन मेरा घबराए। वहीं कोलकाता के मयंक अग्रवाल ने लगन तुमसे लगा बैठे, तुम्हारी शरण मिल गई सांवरे जिंदगी मिल गई सहित एक से बढ़कर एक आकर्षक भजनों की प्रस्तुतियां देकर उपस्थित श्रोताओं को रेर दात तक बांधे रखा। कार्यक्रम में फूलों की होली, ड्रव वर्षा, छप्पन भोग



व बाबा का भव्य श्रंगार किया गया। इस दौरान समिति के पदाधिकारियों ने गायक कलाकारों का दुपट्टा पहनाकर स्वागत किया। इस अवसर पर राकेश सराफ, मुकुल खेमका, बुद्धि प्रकाश शर्मा, फूलचन्द्र अग्रवाल, सोरभ अग्रवाल, विक्रम मित्तल, संजय पारीक, प्रदीप चौहान, गोपी सिंधी, नंदकिशोर सोनी, रमेश सैनी, प्रकाश सैनी, गोविन्द

वर्मा, मुकेश सिंधी, प्रेम सैनी, कमल मोहता, अषोक जागिड़, मनोज सराफ, जगदीश शर्मा, पुनित पिथीसरिया, राजकुमार खत्री, उमाशंकर अग्रवाल, हरिशंकर शर्मा सहित बड़ी संख्या में महिला-पुरुष व श्रीश्याम एकादशी भक्त मण्डल के पदाधिकारी उपस्थित रहे। समिति के विनोद कुमार अग्रवाल ने सभी का आभार व्यक्त किया।

पीसीबी स्कूल में कैरियर मेले का आयोजन

जयपुर

टाइम्स

सुजानगढ़(नि.सं.)। स्थानीय राजकीय पीसीबी उच्च माध्यमिक विद्यालय में कैरियल मेले का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि संगीतकार दिलीप रहे। जबकि प्राचार्य रणवीर सिंह ने अध्यक्षता की। विशिष्ट अतिथि के रूप में घनश्यामनाथ कच्छवा, डॉक्टर शर्मिला सोनी, डॉक्टर सुनील मीणा, कोशलया गुलेरिया, स्नेहप्रभा मिश्रा, सहायक अभियंता राजेंद्र प्रसाद प्रजापत, स्यावरमल प्रजापत, अमृत सेन, विमल गोदारा, सुमन भांबू, शीतल मिश्रा, साधना प्राध्याक आदि मंचस्थ रहे। करियर मेले के कार्यक्रम में 6 सैनियर सेकेंडरी स्कूलों ने भाग लिया, जिसमें क्रिज पोस्टर व मॉडल तीन प्रकार की प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। विद्यालय की छात्राओं ने स्वागत गान व नृत्य प्रस्तुत किया। संगीतकार दिलीप सेन ने पीसीबी स्कूल पर बनाया हुआ एक शानदार गायन सुनाया। दिलीप सेन ने विद्यालय में अपने छात्र को जीवन को याद करते हुए बहुत ही जानकारीयुक्त बातें बताईं। प्रतियोगिताओं में क्रिज में प्रथम स्थान



दिव्यांशु व भावेश (पीसीबी स्कूल) द्वितीय स्थान पीसीबी व तृतीय स्थान राजकीय अयोज्या बाई करवा उमा विद्यालय ने प्राप्त किया। पोस्टर प्रतियोगिता में प्रथम स्थान राजकीय भीमसरिया बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय, द्वितीय स्थान पीसीबी उच्च माध्यमिक विद्यालय व तृतीय स्थान पीसीबी उच्च माध्यमिक विद्यालय ने प्राप्त किया। मॉडल प्रतियोगिता में प्रथम स्थान पीसीबी राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, द्वितीय स्थान

राजकीय भीमसरिया बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय व तृतीय स्थान पीसीबी उच्च माध्यमिक विद्यालय ने प्राप्त किया। पलक, रूपा, दीपिका एंड पार्टी ने सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का संचालन रामेश्वर लाल खीचड़ प्राध्यापक ने किया। प्रधानाचार्य व स्टाफ ने अतिथियों को मोमेंटो भेंट कर स्वागत किया। विद्यार्थियों ने करियर मेले में बढ़चढ़ कर उत्साह के साथ भाग लिया।

सरकारी सम्पति की देखभाल सबकी जिम्मेदारी: धर्म सिंह मीणा



जयपुर टाइम्स

सुजानगढ़(नि.सं.)। शहर के निकटवर्ती गांव मलसीसर में स्थित राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय में 2016 में मर्ज हुए राउप्रावि मलसीसर के भवन की शुरूआत प्रधानाचार्य धर्मसिंह मीणा व ग्रामीणों ने की। सन् 2016 में राउप्रावि मलसीसर को राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय मलसीसर में मर्ज कर देने के कारण भवन रिक्त हो गया था। तब से लेकर अब तक भवन बंद पड़ा रहा। अगस्त माह में ग्रामीणों और सरकार ने प्रधानाचार्य धर्मसिंह को लिखकर मांग की की भवन को शुरू करवाया जाए। इस भवन में 13 वडें कमरे बने हुए हैं, जो लगभग 50 लाख से अधिक के है। इसके बाद प्रधानाचार्य ने एसडीएससी और स्टाफ की बैठक में चर्चा कर प्रस्ताव लिया और आपणी मानव सेवा संस्थान मलसीसर के

सहयोग और ग्रामीणों के सहयोग से मरम्मत, रंग रोगन करवाया। ग्रामीणों के साथ मिलकर प्रधानाचार्य ने इस बंद पड़े भवन में कक्षा 6 से 8 की कक्षाओं की शुरूआत की है। क्योंकि जिस भवन में कक्षा 9 से 12 लगती हैं, वहां कमरों की कमी के कारण इन कक्षाओं का संचालन कठिन था। इस अवसर पर प्रधानाचार्य धर्मसिंह मीणा ने कहा कि सरकारी सम्पति की सुरक्षा और सदुपयोग हम सबकी जिम्मेदारी है। भामाशाहां और ग्रामीणों का सहयोग के लिए आभार प्रकट किया गया। इस कार्य में अपना सक्रिय योगदान देने आपणी मानव सेवा संस्थान के राजेन्द्र भाटी, रामचन्द्र प्रजापत, शेरसिंह मिस्त्री, भंवरलाल धेतरवाल और अध्यापक रूधाराम का प्रधानाचार्य ने विशेष धन्यवाद ज्ञापित कर आभार प्रकट किया। कार्यक्रम में विमला, आरिफ, हसन, राजा, मनोज कड़वासर, पिंकी, रामचन्द्र, गोगा सहित अनेक लोग मौजूद रहे।

गुर्जर समाज करेगा प्रतिभाओं का सम्मान

जयपुर टाइम्स

सुजानगढ़,(नि.सं.)। स्थानीय देवनारायण भगवान मंदिर में श्री देवनारायण मंदिर सेवा समिति ट्रस्ट के तत्वावधान में ट्रस्ट अध्यक्ष नरेन्द्र गुर्जर की अध्यक्षता में गुर्जर समाज की मीटिंग रखी गई। मिटिंग में समाज के छात्र-छात्राओं को प्रतियोगिता परीक्षा की तैयारी के लिए मंदिर के ऊपर बने गेस्ट हाउस में लाइब्रेरी का संचालन शुरू करवाने और मंदिर में बैठक रूम के मरम्मत करवाने व गुर्जर समाज का प्रतिभा सम्मान समारोह का आयोजन रखने के प्रस्ताव रखे गए। प्रस्तावों पर चर्चा करते हुए सर्वसम्मति से निर्णय लिया गया कि 1 जनवरी 2023 के बाद 10वीं 12वीं में स्नातक स्तर पर 75 प्रतिशत से सबसे अधिक वाले छात्र-छात्राओं का व अप्रैल 2019 के बाद प्रतियोगी परीक्षा के माध्यम से राज्य सरकार व भी निर्णय मीटिंग में चर्चानित छात्र छात्रों का सम्मान प्रतिभा सम्मान समारोह में सम्मानित किया जाएगा। प्रतिभा सम्मान समारोह में केवल चूरू जिले व लाडनूं विधानसभा क्षेत्र के लोगों को ही शामिल किया जाएगा। मंदिर प्रांगण में जर्जर पड़े रूम की



मरम्मत भामाशाह ट्रस्ट के उपाध्यक्ष रतनलाल पोसवाल की ओर से स्वयं के खर्च से करवाये जाने का निर्णय लिया गया। मंदिर प्रांगण में पुस्तकालय संचालन का भी निर्णय मीटिंग में सर्व सम्मति से लिया गया। मीटिंग में ट्रस्ट के उपाध्यक्ष रतनलाल पोसवाल, कोषाध्यक्ष अजय साधना, मनोज बोकण, सोहनलाल हाकला, भागीरथ छावड़ी, बजरंगलाल कारीलिया, सतीश लोहमरोड़, शंकरलाल तंवर, जगदीश दौराता,

राजकुमार छावड़ी, जगदीश नारायण चेची, मुलचंद खटाणा, फूलचन्द्र ड़ीडाड़, लिखमाराम हाकला, किशोर डोई, शंकरलाल लीलू, प्रमोद सोरठ, सुरजभान बोकण, चैनाराम बोकण, हैमत सराधना, मदनलाल बोकण, योगेश गुर्जर, आनन्द गुर्जर, दिनेश खटाणा, सुशील लीलू, जगदीश सराधना, दिनेश बोकण सहित समाज के अनेक लोग उपस्थित रहे। संचालन नरेश छावड़ी ने किया।

श्री श्याम संकीर्तन यात्रा दल रवाना

जयपुर टाइम्स

सुजानगढ़(नि.सं.)। श्री श्याम संकीर्तन यात्रा का चौथा चरण प्रारंभ हो गया है। जिसके तहत सोमवार को टीम रवाना तेलंगाना, तमिलनाडु, कर्नाटक के लिए रवाना हुई। नवरत्न पारीक, संदीप जोशी अपनी टीम के साथ रवाना हुए। संदीप जोशी ने बताया कि पहला कीर्तन बेंगलुरु में होगा। श्री श्याम संकीर्तन यात्रा टीम का उद्देश्य घर-घर में बाबा की ज्योत व कीर्तन करवाना और सालासर बालाजी और श्याम बाबा का प्रचार प्रसार करना है।

मुख्य गोगामेड़ी में बालाजी महाराज की मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा



जयपुर टाइम्स

चूरू(निस)। मुख्य गोगामेड़ी परिसर में रामगढ़ प्रवासी गुलाबो देवी की ओर से अपने पिता हरीराम खेमका की स्मृति में सोमवार को नव निर्मित मन्दिर में सालासर बालाजी व शिव परिवार की मूर्ति प्राण-प्रतिष्ठा समारोह पूर्वक आयोजित की गई। पं. हितेश सुन्दरिया, संजय सारस्वत, कमल हारित व दीपक नागवाण ने वैदिक मंत्रोच्चार के साथ विधिवत् पूजा-अर्चना करवाई। कार्यक्रम के मुख्य यजमान रामावतार लोहिया ने सपत्निक पूजा अर्चना की। इस अवसर पर पूर्णाहुति व आरती में भी शहर के प्रबुद्ध नागरिकों ने भाग लिया। इस अवसर पर संजय खेमका, विश्वनाथ शर्मा राजगुरु, अजय लोहिया, विवेक गोंयनका, रामगोपाल लोहिया, मनोज लोहिया, संदीप पाटिल, महेंद्र चौबे, संतोष चांगल, राजू चौबे, योगेश एडवोकेट, संजय जैन, विमल सारस्वत, शेरू गोंयनका, सुनील जालान, रामगोपाल शर्मा सहित बड़ी संख्या में महिला-पुरुष उपस्थित रहे।

सीआई बैंगाराम मीणा का किया स्वागत



जयपुर टाइम्स

सुजानगढ़(नि.सं.)। सुजानगढ़ शहर में कानून व्यवस्था को बेहतर बनाने और चोरियों की घटनाओं में कमी लाने और आम रास्तों पर बेतरतीब खड़े होने वाले वाहनों से निजात दिलाने के लिए कोतवाली सीआई बैंगाराम मीणा का अभिनंदन किया गया है। कॉमरेड जगदीश नाथ के नेतृत्व में यह स्वागत किया गया। इस दौरान राजकुमार, भवानी, बजरंग, नोरतसिंह, अमरचंद दादरवाल, सुशील सैनी, संजू, धीरज जागिड़ आदि ने माल्यार्पण कर सीआई बैंगाराम मीणा का स्वागत किया। सीआई बैंगाराम मीणा ने बताया कि आम जनता को अच्छी पुलिसिंग उपलब्ध करवाना ही हमारा लक्ष्य है। इस अवसर पर कॉमरेड जगदीश नाथ ने सीआई बैंगाराम मीणा को सविधान निर्माता बाबा साहेब डॉ. भीमराव अम्बेडकर की मूर्ति भेंट की।

चूरू में रेलवे की खिड़की से दी पुरानी प्लेटफार्म टिकट

जयपुर टाइम्स

चूरू(निस)। चूरू में टिकट खिड़की से पुरानी प्लेटफार्म टिकट दिए जाने का मामला सामने आया है। जानकारी के अनुसार पिछली रात्रि को 7 बजकर 40 मिनट पर बुकिंग खिड़की के बावू ने यात्रियों को पुरानी प्लेटफार्म टिकट देकर उनके साथ धोखाधड़ी की और रेलवे को चूना लगाया। यहां राजेन्द्र सिंह शेखावत ने बताया कि रविवार रात्रि को 7 बजकर 40 मिनट पर टिकट खिड़की से 2 प्लेटफार्म टिकट दिए थे। टिकट खिड़की पर बैठे कर्मचारी ने 4 बजे की पुरानी प्लेटफार्म टिकट दे दी। सबसे टिकट पर लिखा समय देखा तो इस बात का खुलासा हुआ। जब टिकट 7 बजकर 40 मिनट पर ली थी तो एक टिकट समय 16.04 और दूसरी पर 16. 55 कैसा लिखा गया। इसका सीधा सा अर्थ है कि टिकट खिड़की से बाबू ने पुरानी टिकट दी है। इसमें टिकट खिड़की वाले और टीसी की मिली भगत है। टीसी ने ही यात्रियों से टिकट कलेक्ट करने वापस खिड़की वाले को दी है। उसने पुनः उन टिकटों को रुपया लेकर यात्रियों को बेच दी है। ये खेल कब से और किस किसकी मिली भगत से चल रहा है, यह जांच का विषय है। राजेन्द्र सिंह शेखावत ने चूरू स्टेशन अधीक्षक को ज्ञान देकर पुरानी टिकट बेचने वाले बाबू और उसे टिकट उपलब्ध कराने वाले टीसी के खिलाफ कठोर कार्यवाही करने की मांग की है। मजे की बात देखो बाबू और टीसी को मोटी तनखा मिलती है, उसके बाद भी उनका पेट नहीं भर रहा है। वे यात्रियों के साथ ठगी करके अपने कर्तव्य और रेलवे के साथ धोखा कर रहे हैं।

महाराणा प्रताप स्कूल में वार्षिकोत्सव व प्रतिभा सम्मान समारोह

जयपुर टाइम्स

चूरू(निस)। शहर के निकटवर्ती गांव रिड्खला के महाराणा प्रताप उच्च माध्यमिक विद्यालय में रविवार देर शाम सातवां वार्षिकोत्सव अभ्युदय 2025 व प्रतिभा सम्मान समारोह धूमधाम से मनाया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ मां सरस्वती के चित्र के समक्ष दीप प्रज्वलित कर किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि पूर्व प्राचार्य डॉ. केसी सोनी व विनैत्र योग धाम के योगाचार्य डॉ. मनोज शर्मा रहे। प्रधानाचार्य संजय पारीक ने मंचस्थ अतिथियों का माल्यार्पण कर व प्रतीक चिन्ह प्रदान कर सम्मान किया। विद्यालय के छात्र- छात्राओं ने एक से बढ़कर एक देशभक्ति व फिल्मीगीतों पर शानदार प्रस्तुतियां देकर उपस्थित श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया। कार्यक्रम में अतिथियों ने गत सत्र में विद्यालय में विज्ञान वर्ग में 95 प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त करने वाली छात्रा सविता साहू, कला वर्ग में टॉपर रोहित मेघवाल को लैपटॉप व प्रतीक चिन्ह प्रदान कर सम्मानित किया। इसी क्रम में कक्षा 10 में 75 प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को भामाशाह करतार सिंह ने 1100 रुपए नकद प्रदान कर सम्मानित किया गया। विद्यालय के निदेशक विक्रम पारीक ने विद्यालय की उपलब्धियां और गतिविधियों की विस्तृत जानकारी दी। कार्यक्रम का संचालन संदीप व नरेंद्र ने संयुक्त रूप से किया।

नपा व पुलिस प्रशासन ने बाजार से हटाया अतिक्रमण, आवागमन हुआ सुगम



जयपुर टाइम्स

तारानगर(निस)। तारानगर उप पुलिस अधीक्षक रोहित सांखला के सुपर विजन में तारानगर धानाधिकारी गौरव खिड़िया ने नगरपालिका अधिशाषी अधिकारी अजय प्रताप सिंह व उनकी टीम के सहयोग से सोमवार को मय जासे के शहर में अतिक्रमण हटाया। धानाधिकारी खिड़िया ने बताया कि मुख्य बाजार की सड़कों पर व्यापारियों ने 3-5 फीट तक अतिक्रमण कर लिया था जिससे यातायात व आमजन को बड़ी परेशानी होती रहती है। सीएलजी की बैठक में भी बार बार ये मुद्दा उठ चुका है। शहरवासियों ने भी कई बार इसकी शिकायत पालिका में दें दी है। प्रशासन के बार बार समझाइस करने के बाद भी व्यापारी नहीं मान रहे थे जिसको लेकर सोमवार को मय जासे के पालिका कर्मचारियों के साथ बाजार से अतिक्रमण हटाया गया। धानाधिकारी ने बताया कि व्यापारियों को निर्देश दिए कि अगर भविष्य में फिर से अतिक्रमण पाया गया तो कठोर कार्यवाही की जाएगी। इस मोके पर सफाई निरीक्षक त्रिशूल भाटी, धाने के सहायक उप निरीक्षक विजयसिंह, हैड कॉन्स्टेबल सुभाष शर्मा, महेश मीणा, हरिदान चारण, हुक्माराम, कॉन्स्टेबल ओमप्रकाश शर्मा, महेन्द्र, धर्मवीर, श्रवण, सोमवीर, राजेंद्र सहित पुलिस स्टाफ व पालिका के कर्मचारी साथ रहे।

खेमका स्कूल से चौपाटी तक सड़क निर्माण अधूरा



जयपुर टाइम्स

चूरू(निस)। दो वर्ष पूर्व झारिया मीरी से चूरू चौपाटी तक सार्वजनिक विभाग की ओर से सड़क बनाया जाना प्रस्तावित थी। लेकिन किसी कारण वंश यह सड़क सिर्फ झारिया मीरी से लेकर खेमका स्कूल तक ही बन पाई। खेमका स्कूल से लेकर चूरू चौपाटी तक आज तक सड़क अधूरी है। अखिरकार सार्वजनिक विभाग की ओर से यह कैसा आदेश पारित किया जो आज तक सड़क नहीं बन पाई। सार्वजनिक विभाग 2 साल से आंख में मिचोली का खेल जनता के साथ खेल रही है। वार्ड नंबर 57 व 58 के वार्ड वासियों का कहना है कि यह हमारे साथ भेदभाव किया गया है। इस अधूरी सड़क को लेकर कलेक्टर और सार्वजनिक विभाग को बार-बार अवगत कराने के बाद भी किसी प्रकार की सुध नहीं ली गई है। अखिरकार कब होगा चूरू का विकास कब अधूरी सड़क का कार्य पूर्ण होगा।

कानपुर में पूर्व मंत्री रिणवां का तेरापंथ सभा ने किया स्वागत



जयपुर टाइम्स

सरदारशहर(निस)। तेरापंथी सभा कानपुर की ओर से तेरापंथ भवन में राजस्थान सरकार के पूर्व मंत्री राजकुमार रिणवां अपनी टीम के साथ महाकुंभ प्रयागराज स्नान करने प्रयागराज जा रहे थे। उनका स्वागत सम्मान समाज के अध्यक्ष प्रवीण सुगणा, महिला मंडल की अध्यक्ष शालिनी बुच्चा, तेजकरणा बुच्चा, गणेशमल जम्मड़, समाजसेवी राजकुमार बुच्चा, सुधा बुच्चा, राहुल बुच्चा सहित समाज के पदाधिकारियों व कार्यकर्ताओं की ओर से पूर्व मंत्री रिणवां सहित पूरी टीम का दुपट्टा शॉल व माला पहनाकर शानदार स्वागत व अभिनंदन किया गया। इस अवसर पर भाजपा जिला मंत्री श्याम परीक, पार्षद दीपक बैद, विकास रिणवां, मनीष रिणवां, विद्याधर शर्मा, तोलाराम पारीक, हरीराम गोदार, ज्ञानीराम मीणा, सुरेन्द्र जागिड़, मुरलीधर, गिरीश, बाबुलाल शर्मा, सोरभ रिणवां सहित अनेक लोग उपस्थित रहे। इस अवसर पर पूर्व मंत्री राजकुमार रिणवां ने तेरापंथ सभा का आभार जताया।

पुलिस लाइन में महिला कांस्टेबल के कार्टर का ताला तोड़ा: कैश और ज्वेलरी ले गए चोर

जयपुर टाइम्स

झुंझुनू(निस)। झुंझुनू पुलिस लाइन में चोरी का सिलसिला नहीं रुक रहा है। पिछले महीने हुई चोरी का पुलिस खुलासा नहीं कर पाई है कि चोरों ने एक और वारदात को अंजाम दे दिया। चोर पुलिस लाइन में स्थित महिला कांन्स्टेबल के कार्टर का ताला तोड़कर नगदी और जेवरात समेत अन्य कीमती सामान चोरी कर ले गए। वारदात के दौरान कार्टर के ताला लगा हुआ था। वापस आए तो कार्टर का ताला टूटा हुआ मिला। सामान बिखरा हुआ था। इस संबंध में महिला कॉन्स्टेबल के ससुर मूलचंद कृष्णया निवासी बुड़ाना हाल आबाद झुंझुनू पुलिस ने चोर के खिलाफ कोतावाली धाने में रिपोर्ट दी है। रिपोर्ट में मूलचंद ने बताया कि मेरी पुत्रवधू महिला कॉन्स्टेबल मीनिका को झुंझुनू पुलिस में कार्टर मिला हुआ है। जिसमें मैं भी रहता हूं। कार्टर को ताला लगाकर जयपुर गया था। करीब 4 दिन बाद वापस लौटा तो देखा कि मेन गेट का ताला टूटा हुआ है। सामान बिखरा हुआ है। घर से एक जोड़ी सोने की कान की बाली, दो चांदी की पायल, एक हाथ का चांदी का कड़ा, दो कम्बल समेत 13 हजार रुपए गायब मिले। इसके बाद पुलिस को सूचना दी। पुलिस ने मोके पर पहुंचकर मौका आयायना किया। गौरतलब है कि पिछले महीने ने भी पुलिस में एक महिला कॉन्स्टेबल के कार्टर का ताला टूटा था। चोर जेवरात सहित नकदी चोरी कर ले गए थे।

सरकार की मंशानुरूप प्रकरणों का निस्तारण कर आमजन को करें संतुष्ट: सुराणा

आवश्यक सेवाओं की साप्ताहिक समीक्षा बैठक में दिए दिशा निर्देश

जयपुर टाइम्स

चूरू(निस)। जिला कलक्टर अभिषेक सुराणा ने सोमवार को डीओआईटी वीसी सभागार में आवश्यक सेवाओं की साप्ताहिक समीक्षा बैठक में ग्रामीण विकास, शहरी निकाय व्यवस्थाओं, सम्पर्क पोर्टल सहित विभिन्न विन्दुओं पर चर्चा कर अधिकारियों को निर्देश दिए। जिला कलक्टर सुराणा ने कहा कि मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा की मंशा है कि प्रत्येक नागरिक तक बेहतरीन सुविधाओं का लाभ पहुंचे और उनकी समस्याओं का त्वरित निस्तारण हो। इसलिए



सभी अधिकारीगण सरकार की मंशानुरूप प्रकरणों का निस्तारण कर आमजन को संतुष्ट करें। उन्होंने सभी अधिकारियों से कहा कि सम्पर्क पोर्टल पर दर्ज प्रकरणों का समयबद्ध ढंग से निस्तारण सुनिश्चित करें। प्रकरणों के निस्तारण में निर्धारित

समयसीमा का ध्यान रखें ताकि अनावश्यक पेंडेंसी न रहे। उन्होंने परिवहन व शिक्षा विभाग के अधिकारियों से कहा कि जिले में संचालित बाल बालिकाओं की जांच करें और बिना परमिट व फिटनेस के संचालित होने वाली बसों व स्कूल

पंचायतीराज संस्थाओं में उपचुनाव के दौरान मतदान दिवस को सवैतनिक अवकाश

जयपुर टाइम्स

चूरू(निस)। जिला निर्वाचन अधिकारी अभिषेक सुराणा ने आदेश जारी कर सभी विभागों, उपक्रमों, बोर्ड व निगमों के विभागाध्यक्षों, कार्यालयाध्यक्षों को उनके कार्मिकों को जिले की सरदारशहर पंचायत समिति के वार्ड संख्या 8 सदस्य पद, राजगढ़ पंचायत समिति की ददरेवा ग्राम पंचायत व चूरू पंचायत समिति की भामासी ग्राम पंचायत के सरपंच पद के उपचुनाव के दौरान मतदान करने के निर्देश दिए हैं। जारी आदेशानुसार लोक प्रतिनिधित्व अधिनियम, 1951 की धारा 135 (ख) के अनुसार मतदान के दिन किसी कारोबार, व्यवसाय, औद्योगिक उपक्रम अथवा अन्य किसी स्थापन में नियोजित प्रत्येक व्यक्ति को, जो लोकसभा या किसी राज्य की विधानसभा के लिए निर्वाचन में मतदान करने व हकदार है, मतदान के दिन अवकाश मंजूर किया जाएगा। उपधारा (1) के अनुसार अवकाश मंजूर किये जाने

स्थापन में नियोजित प्रत्येक व्यक्ति, जो लोकसभा/ विधानसभा के लिए निर्वाचन में मतदान करने का हकदार है, को मतदान के दिन सवैतनिक अवकाश मंजूर किया जाएगा। लोक प्रतिनिधित्व अधिनियम, 1951 की धारा 135 (ख) के प्रावधान राजस्थान पंचायतीराज अधिनियम, 1994 की धारा 22 के अनुसार पंचायतीराज संस्थाओं के चुनावों के संबंध में भी लागू होते हैं। इसी क्रम में धारा 135 (ख) के अनुसार किसी कारोबार, व्यवसाय, औद्योगिक उपक्रम अथवा अन्य किसी स्थापन में नियोजित प्रत्येक व्यक्ति को, जो लोकसभा या किसी राज्य की विधानसभा के लिए निर्वाचन में मतदान करने व हकदार है, मतदान के दिन अवकाश मंजूर किया जाएगा। उपधारा (1) के अनुसार अवकाश मंजूर किये जाने

कृषक राज किसान एण् से स्वयं करें गिरदावरी: बिजेन्द्र सिंह

एसडीएम ने पीथीसर व सोमासी ग्राम पंचायत में किया फार्मर रजिस्ट्री शिविर का अवलोकन



जयपुर टाइम्स

चूरू(निस)। जिला कलक्टर अभिषेक सुराणा के निर्देशानुसार चूरू एसडीएम बिजेन्द्र सिंह ने सोमवार को चूरू तहसील की पीथीसर व सोमासी ग्राम पंचायत में चल रहे फार्मर रजिस्ट्री शिविर का अवलोकन किया। इस अवसर पर एसडीएम बिजेन्द्र सिंह ने कहा कि कृषक राज किसान एण् से स्वयं गिरदावरी करें। राजस्व व कृषि विभाग के अधिकारी, कर्मचारी किसानों को एण् के माध्यम से

गिरदावरी करने का समुचित प्रशिक्षण दें व किसानों को जागरूक करें। उन्होंने कहा कि किसानों को फार्मर रजिस्ट्री के बारे में समुचित जानकारी दें और फार्मर रजिस्ट्री के महत्व से अवगत करवाते हुए अधिकाधिक किसानों की फार्मर रजिस्ट्री की जाए। उन्होंने शिविरों के दौरान सभी विभागों के कार्यों का अवलोकन कर समुचित निर्देश दिए। इस दौरान प्रशिक्षु आरएएस साक्षी पुरी, नायब तहसीलदार महेन्द्र गहलोत, चुन्नीलाल, गिरदावर बजरंग सिंह, निजी सहायक सुरेश कुमार सहित अन्य उपस्थित रहे।

अमृता हाट मेले में दी सांस्कृतिक प्रस्तुतियां

जयपुर टाइम्स

चूरू/सरदारशहर (निस)। जिला कलक्टर अभिषेक सुराणा के निर्देशन में जिले के सरदारशहर उपखंड मुख्यालय स्थित ताल मैदान में चल रहे अमृता हाट मेले में रविवार सांय को सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस दौरान तारानगर एसडीएम राजेन्द्र कुमार, एसबीईओ बाबूलाल पारीक, गिरदावर दीगपाल, पीएनबी से विनोद मीणा सहित अतिथि मंचस्थ रहे। कार्यक्रम में अभिचेतना गुप ने लोकगीतों पर मनमोहक सांस्कृतिक प्रस्तुतियां दी।



सहायक निदेशक जयप्रकाश ने अतिथियों का स्वागत किया। सुपरवाइजर कृष्णा ने धन्यवाद ज्ञापित किया। संचालन सुरेन्द्र कर्स्वा ने किया।

पंचायत समिति मुख्यालयों पर दिव्यांगता शिविर आज से

जयपुर टाइम्स

चूरू(निस)। जिले के सभी पंचायत समिति मुख्यालयों पर मंगलवार से दिव्यांगता शिविर आयोजित किए जाएंगे। जिला कलक्टर अभिषेक सुराणा ने आदेश जारी कर शिविरों के आयोजन को लेकर समुचित निर्देश दिए हैं। जारी आदेशानुसार मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा की ओर से दिव्यांगजनों को संबल प्रदान करने की दृष्टि से

पंचायत समिति, 17 फरवरी को सरदारशहर पंचायत समिति, 18 फरवरी को रतनगढ़ पंचायत समिति, 21 फरवरी को सुजानगढ़ पंचायत समिति व 25 फरवरी को बीदासर पंचायत समिति परिसर में संवरे 10 बजे से सांय 5 बजे तक शिविर आयोजित किए जाएंगे। इसी क्रम में 40 प्रतिशत या अधिक दिव्यांगता वाले दिव्यांगजनों को प्रमाण पत्र जारी कर यूडीआईडी के लिए स्वावलंबन पोर्टल पर ऑनलाइन

पंजीयन किया जाएगा व दिव्यांगजनों के रोडवेज पास, विशेष योग्यजन छात्रवृत्ति, मुख्यमंत्री स्वरोजगार योजना, पालनहार योजना, पेंशन आदि के आवेदन तैयार करवाए जाएंगे व सहायक उपकरण के लिए आवेदन करवाए जाएंगे। जिला कलक्टर सुराणा ने शिविरों के आयोजन को लेकर उपखंड अधिकारियों को प्रमारी अधिकारी व बीसीएमओ व सामाजिक सुस्था अधिकारी को सहायक प्रमारी नियुक्त

पंजीयन किया जाएगा व दिव्यांगजनों के रोडवेज पास, विशेष योग्यजन छात्रवृत्ति, मुख्यमंत्री स्वरोजगार योजना, पालनहार योजना, पेंशन आदि के आवेदन तैयार करवाए जाएंगे व सहायक उपकरण के लिए आवेदन करवाए जाएंगे। जिला कलक्टर सुराणा ने शिविरों के आयोजन को लेकर उपखंड अधिकारियों को प्रमारी अधिकारी व बीसीएमओ व सामाजिक सुस्था अधिकारी को सहायक प्रमारी नियुक्त

किया है। इसी के साथ संबंधित तहसीलदार, विकास अधिकारी, एसजेडी डीडी, सीएमएचओ, राजस्थान राज्य पथ परिवहन निगम प्रबंधक, डीओआईटी संयुक्त निदेशक सहित अधिकारियों को समुचित निर्देश दिए हैं। उन्होंने सभी दिव्यांगजनों से आधार कार्ड, जनाधार कार्ड, मोबाइल नंबर, फोटो, पूर्व में जारी दिव्यांगता प्रमाण-पत्र व आवश्यक दस्तावेजों सहित शिविर में उपस्थित होने की अपील की है।

नहरबंदी के दौरान जल के मितव्ययता से उपयोग की अपील

जयपुर टाइम्स

चूरू(निस)। जिले में इन्दिरा गांधी नहर परियोजना के लाइनिंग के रख-रखाव, मरम्मत व नहर की सफाई आदि कार्य के लिए मार्च, 2025 से मई, 2025 तक आंशिक और पूर्ण नहर बन्दी प्रस्तावित है। जिला कलक्टर अभिषेक सुराणा ने नहरबंदी के कारण आमजन से जल के मितव्ययता से उपयोग की अपील की है। पीएचईडी एसई चुन्नीलाल ने बताया कि नहरी पेयजल आपूर्ति से जुड़े तहसील चूरू, तारानगर, राजगढ़, सरदारशहर, नोहर, भादरा के गांवों में जल वितरण में आंशिक कटौती करते हुए एकांतर दिन (एक दिन छोड़कर एक दिन) आपूर्ति किया जाना प्रस्तावित है। उन्होंने बताया कि विभाग की ओर से नहरबंदी की अवधि में पेयजल आपूर्ति के लिए आवश्यक भण्डारण व्यवस्था की जा रही है। उन्होंने आमजन से अपील की है कि नहरबंदी के दौरान पानी का मितव्ययता से उपयोग करें, पानी का व्यर्थ दुरुपयोग ना करें तथा अपने निजी भण्डारण को अभी से पूर्ण रूप से भरना सुनिश्चित करें।

पंचायतीराज संस्थाओं में उपचुनाव के लिए जोनल मजिस्ट्रेट नियुक्त

जयपुर टाइम्स

चूरू(निस)। जिला कलक्टर व जिला मजिस्ट्रेट अभिषेक सुराणा ने आदेश जारी कर 14 फरवरी, 2025 को जिले की सरदारशहर पंचायत समिति के वार्ड संख्या 8 सदस्य पद, राजगढ़ पंचायत समिति की ददरेवा ग्राम पंचायत व चूरू पंचायत समिति की भामासी ग्राम पंचायत के सरपंच पद के उपचुनाव के दौरान शांति व कानून व्यवस्था और मतदान दिवस को मतदान से संबंधित विभिन्न सूचनाएं समय-समय उपलब्ध करवाने के लिए जोनल मजिस्ट्रेट नियुक्त किए हैं। जारी आदेशानुसार भानीपुरा तहसीलदार को सरदारशहर पंचायत समिति के ब्लॉक संख्या 8, चूरू तहसीलदार को ग्राम पंचायत भामासी व राजगढ़ तहसीलदार को ददरेवा ग्राम पंचायत के लिए जोनल मजिस्ट्रेट नियुक्त किया गया है।

रोजगार सहायता शिविर 28 फरवरी को

जयपुर टाइम्स

चूरू (निस)। रोजगार सेवा निदेशालय, राजस्थान और जिला कलक्टर अभिषेक सुराणा के निर्देशानुसार जिला रोजगार कार्यालय की ओर से 28 फरवरी, को संवरे 10 बजे से जिला मुख्यालय स्थित मातृश्री कमला गोयनका टाउन हॉल में बेरोजगार युवाओं के लिए एक दिवसीय रोजगार सहायता शिविर आयोजित किया जाएगा। रोजगार सहायक निदेशक र्षा जानू ने बताया कि शिविर में राज्य के 8 वीं पास से लेकर स्नातकोत्तर उपाधि प्राप्त शिक्षित बेरोजगार आशार्थियों को ई-कॉमर्स, बैंकिंग, सेल्स मार्केटिंग, सुरक्षा, बीमा आदि निजी क्षेत्रों में रोजगार के अवसर प्रदान किए जाएंगे। विभिन्न कम्पनियों की ओर से साक्षात्कार के माध्यम से रिक्त पदों के विरूद्ध बेरोजगार आशार्थियों का चयन किया जाएगा। इसी के साथ उद्योग केन्द्र, औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान, आरएसएलडीसी, अनुज्ञा निगम की ओर से स्वरोजगार, ऋण योजना से विभागों की ओर से संचालित योजनाओं के बारे में जानकारी दी जाएगी। उन्होंने बताया कि बेरोजगार आशार्थी अपने मूल शैक्षणिक दस्तावेज, फोटोयुक्त पहचान पत्र दस्तावेज मय प्रतिलिपि, पासपोर्ट साइज फोटो आदि के साथ रोजगार सहायता शिविर में भाग ले सकते हैं। अधिक जानकारी के लिये आशार्थी जिला रोजगार कार्यालय, चूरू में सम्पर्क कर सकते हैं।